आपका ब्रांड यहाँ
आपका नाम, लोगो, रंग और संपर्क विवरण यहाँ छपते हैं



संपूर्ण कुण्डली रिपोर्ट

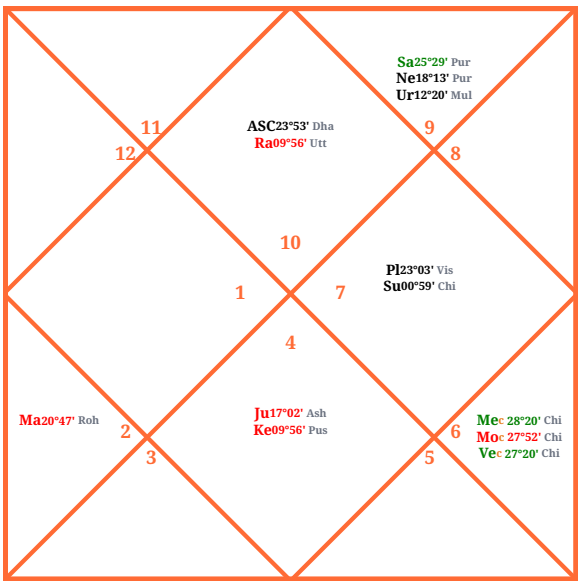
नमूना रिपोर्ट

दिनांक और समय	1990-10-18T14:30:00
समय क्षेत्र	Asia/Kolkata
अक्षांश	28.6139
देशांतर	77.209
तैयार	2026-11-08
भाषा	hi

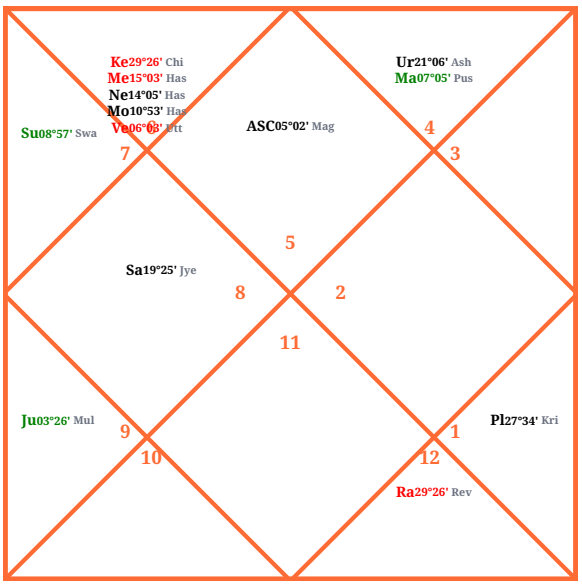
विषय-सूची

कुण्डलियाँ 3
जन्म विवरण 4
ग्रह 5
ग्रह अवस्थाएँ 6
शक्तियाँ 7
भाव बल 8
अष्टकवर्ग 9
विंशोत्तरी दशा 11
योगिनी दशा 15
मांगलिक 24
कालसर्प 25
पितृ दोष 25
साढ़े साती 26
राज योग 28
धन योग 29
महापुरुष योग 31
चन्द्र योग 32
सूर्य योग 33
प्रकृति 34
स्वरूप 35
नक्षत्र 35
भाव 37
भावों में ग्रह 41
दशा फल 42
शुभ वस्तुएँ 43
रत्न 44
जीवन रिपोर्ट 45
रुद्राक्ष 48

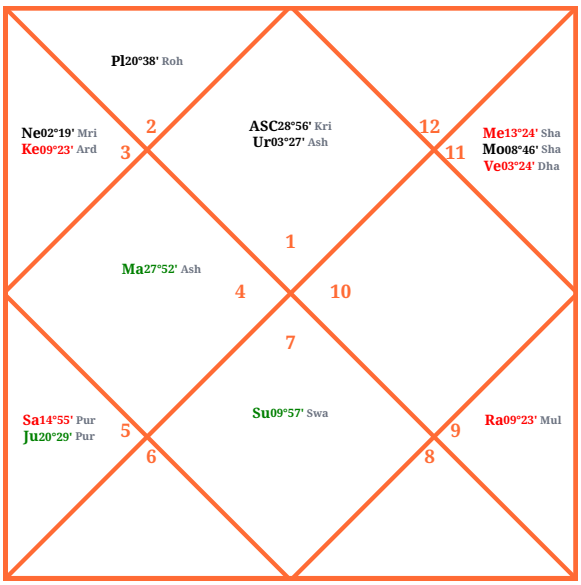
कुण्डलियाँ



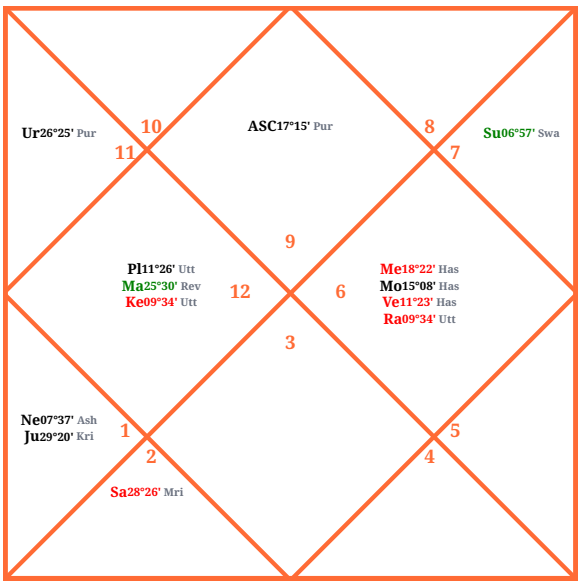
जन्म कुंडली (D1)



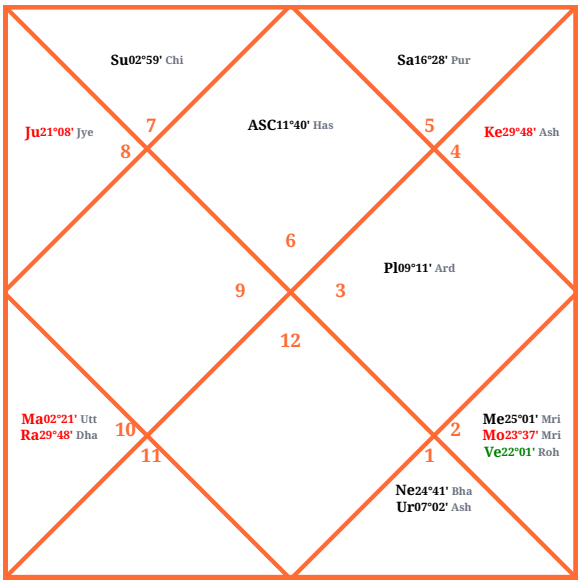
नवांश (D9)



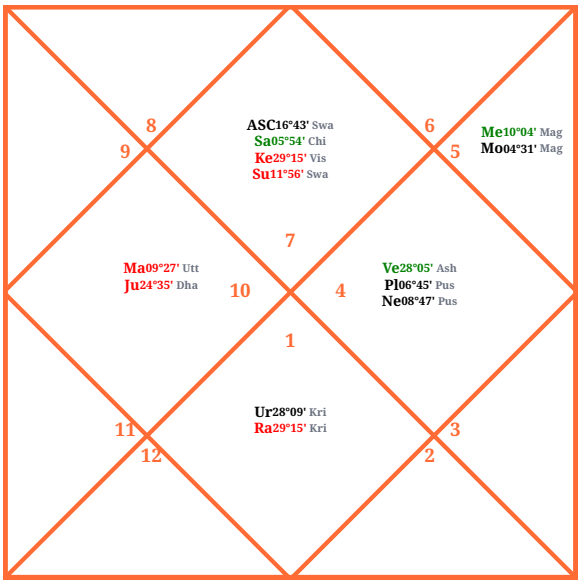
दशमांश (D10)



सप्तांश (D7)



द्रेष्काण (D3)



द्वादशांश (D12)

जन्म विवरण

लग्न

राशि	मकर
राशिश	शनि
नक्षत्र	धनिष्ठा
पद	1

चंद्र

राशि	कन्या
राशिश	बुध
नक्षत्र	चित्रा
नक्षत्र स्वामी	मंगल
पद	2

सूर्य राशि · निरयण	तुला
सूर्य राशि · सायन	तुला

अवकहड़ा

वर्ण	वैश्य
वश्य	Manava
योनि	बाघ
गण	राक्षस
नाड़ी	मध्य
राशि स्वामी	बुध
पाया	Silver
तत्त्व	Prithvi

तत्व	पृथ्वी
युंज	अन्त्य
वर्ग	Mouse
हंसक	Prithvi
नाम अक्षर	Po

जन्म के समय पंचांग · तिथि	अमावस्या
जन्म के समय पंचांग · योग	वैधृति
जन्म के समय पंचांग · करण	Naga

सूर्योदय के समय पंचांग

तिथि	अमावस्या
पक्ष	Krishna
नक्षत्र	चित्रा
योग	वैधृति
करण	Chatushpada

अंग समाप्ति समय

तिथि	21:06
नक्षत्र	07:40
योग	16:31
करण	21:06

सूर्योदय	06:23:52
सूर्यास्त	17:49:12

ग्रह

भाव प्रणाली	Whole sign

लग्न

राशि	मकर
राशि संख्या	10
राशिश	शनि
अंश	23.8935
अंश DMS	23-53-37
देशांतर	293.8935
नक्षत्र	धनिष्ठा
नक्षत्र संख्या	23
नक्षत्र स्वामी	मंगल
पद	1

ग्रह

नाम	राशि	राशि संख्या	राशिश	अंश	अंश DMS	देशांतर	नक्षत्र
सूर्य	तुला	7	शुक्र	0.9951	00-59-42	180.9951	चित्रा
चंद्र	कन्या	6	बुध	27.8766	27-52-36	177.8766	चित्रा
मंगल	वृषभ	2	शुक्र	20.7877	20-47-16	50.7877	रोहिणी
बुध	कन्या	6	बुध	28.34	28-20-24	178.34	चित्रा
गुरु	कर्क	4	चंद्र	17.0493	17-02-58	107.0493	आश्लेषा
शुक्र	कन्या	6	बुध	27.3406	27-20-26	177.3406	चित्रा
शनि	धनु	9	गुरु	25.4923	25-29-32	265.4923	पूर्वाषाढ़ा
राहु	मकर	10	शनि	9.9384	09-56-18	279.9384	उत्तराषाढ़ा
केतु	कर्क	4	चंद्र	9.9384	09-56-18	99.9384	पुष्य
अरुण	धनु	9	गुरु	12.3459	12-20-45	252.3459	मूल
वरुण	धनु	9	गुरु	18.2324	18-13-57	258.2324	पूर्वाषाढ़ा
यम	तुला	7	शुक्र	23.0635	23-03-49	203.0635	विशाखा

नाम	नक्षत्र संख्या	नक्षत्र स्वामी	पद	भाव	गति	वक्री	अस्त
सूर्य	14	मंगल	3	10	0.993145	नहीं	नहीं
चंद्र	14	मंगल	2	9	12.335806	नहीं	हाँ
मंगल	4	चंद्र	4	5	0.035376	नहीं	नहीं
बुध	14	मंगल	2	9	1.710469	नहीं	हाँ
गुरु	9	बुध	1	7	0.12405	नहीं	नहीं
शुक्र	14	मंगल	2	9	1.25186	नहीं	हाँ
शनि	20	शुक्र	4	12	0.040927	नहीं	नहीं
राहु	21	सूर्य	4	1	-0.226596	हाँ	नहीं
केतु	8	शनि	2	7	-0.226596	हाँ	नहीं
अरुण	19	केतु	4	12	0.027975	नहीं	नहीं
वरुण	20	शुक्र	2	12	0.013483	नहीं	नहीं
यम	16	गुरु	1	10	0.03801	नहीं	नहीं

ग्रह अवस्थाएँ

ग्रह

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	बालादि	जाग्रदादि	दीप्तादि	परिणाम श्रेणी
सूर्य	तुला	0.995	चित्रा	Bal	Susupta	Neecha	25%
चंद्र	कन्या	27.8767	चित्रा	Bal	Swapna	Sama	25%
मंगल	वृषभ	20.7878	रोहिणी	Kumar	Swapna	Sama	50%
बुध	कन्या	28.34	चित्रा	Bal	Swapna	Sama	25%
गुरु	कर्क	17.0494	आश्लेषा	Yuva	Swapna	Sama	100%
शुक्र	कन्या	27.3406	चित्रा	Bal	Swapna	Sama	25%
शनि	धनु	25.4922	पूर्वाषाढ़ा	Mrit	Susupta	Sama	Nil
राहु	मकर	9.9383	उत्तराषाढ़ा	Vriddha	Swapna	Sama	Negligible
केतु	कर्क	9.9383	पुष्य	Vriddha	Swapna	Sama	Negligible
अरुण	धनु	12.3458	मूल	Yuva	Swapna	Sama	100%
वरुण	धनु	18.2325	पूर्वाषाढ़ा	Vriddha	Swapna	Sama	Negligible

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	बालादि	जाग्रदादि	दीप्तादि	परिणाम श्रेणी
यम	तुला	23.0636	विशाखा	Vriddha	Swapna	Sama	Negligible

शक्तियाँ

इकाई	Virupas

ग्रह

ग्रह	कुल विरुपा	रूप	न्यूनतम रूप	अनुपात	पद	दिक्	चेष्टा
सूर्य	501.06	8.35	5	1.67	1	52.37	21.22
गुरु	600.66	10.01	6.5	1.54	2	2.28	27.72
शनि	388.62	6.48	5	1.29	3	9.47	28.51
बुध	440.57	7.34	7	1.05	4	21.48	50.84
मंगल	308.93	5.15	5	1.03	5	8.96	51.06
शुक्र	294.29	4.9	5.5	0.89	6	8.85	38.7
चंद्र	283.76	4.73	6	0.79	7	8.67	1.04

ग्रह	नैसर्गिक	दृक्	इष्ट फल	कष्ट फल
सूर्य	60	10.48	7.98	47.02
गुरु	34.28	-15.98	39.39	11.39
शनि	8.57	-1.9	32.99	26.22
बुध	25.7	8.82	53.14	6.38
मंगल	17.14	-1.57	33.82	18.33
शुक्र	42.85	8.19	2.06	35.72
चंद्र	51.43	8.53	3.49	53.36

स्थान

ग्रह	उच्च	सप्तवर्गज	ओज युग्म	केन्द्र	द्रेष्काण	कुल
सूर्य	3	75	30	60	15	183
गुरु	55.98	153.75	15	60	0	284.73
शनि	38.17	88.13	15	15	0	156.3
बुध	55.55	146.25	0	15	0	216.8
मंगल	22.4	52.5	0	30	0	104.9
शुक्र	0.11	65.63	30	15	15	125.74
चंद्र	11.71	75	30	15	15	146.71

कला

ग्रह	नतोन्नत	पक्ष	त्रिभाग	अब्द	मास	वार	होरा
सूर्य	49.33	58.96	0	0	30	0	0
गुरु	49.33	1.04	60	0	0	45	60
शनि	10.67	58.96	60	0	0	0	0
बुध	60	1.04	0	0	0	0	0
मंगल	10.67	58.96	0	0	0	0	0
शुक्र	49.33	1.04	0	0	0	0	0
चंद्र	10.67	1.04	0	15	0	0	0

कला

ग्रह	अयन	युद्ध	कुल
सूर्य	35.7	0	173.99
गुरु	52.26	0	267.63
शनि	58.04	0	187.67
बुध	40.89	15	116.93
मंगल	58.81	0	128.44
शुक्र	19.59	0	69.96
चंद्र	40.67	0	67.38

भाव बल

विधि

विधि संस्करण	bhava-bala-2

कुल विरूप में शामिल हैं

भावाधिपति बल | दिग्बल | दृष्टि बल

कुल विरूप में शामिल नहीं हैं

युति बल | काल बल

समायोजित कुल विरूप में शामिल हैं

भावाधिपति बल | दिग्बल | दृष्टि बल | युति बल | काल बल

समायोजन का स्रोत	Raman: Graha and Bhava Balas
प्रति रूप विरूप	60

इकाई	Virupas
जन्म अवधि	दिन
सबसे बलवान भाव	3
सबसे दुर्बल भाव	7

भाव

भाव	राशि	भाव-सन्धि भोगांश	स्वामी	भावाधिपति बल	दिग्बल	दृष्टि बल	कुल विरुपा
1	मकर	293.89	शनि	388.62	30	64.22	482.84
2	कुम्भ	328.33	शनि	388.62	50	53.19	491.81
3	मेष	2.77	गुरु	600.66	50	48.74	699.4
4	वृषभ	37.21	मंगल	308.93	0	41.82	350.75
5	मिथुन	62.77	शुक्र	294.29	10	23.86	328.15
6	मिथुन	88.33	बुध	440.57	10	5.62	456.19
7	कर्क	113.89	चंद्र	283.76	30	-9.53	304.23
8	सिंह	148.33	सूर्य	501.06	40	-18.13	522.93
9	तुला	182.77	बुध	440.57	20	-2.65	457.92
10	वृश्चिक	217.21	शुक्र	294.29	30	31.4	355.69
11	धनु	242.77	मंगल	308.93	20	50.97	379.9
12	धनु	268.33	गुरु	600.66	40	44.55	685.21

भाव	रूप	पद	अधिवासी	युति बल	काल बल	समायोजित कुल विरूप	समायोजित रूप
1	8.05	5	—	0	0	482.84	8.05
2	8.2	4	—	0	15	506.81	8.45
3	11.66	1	—	0	0	699.4	11.66
4	5.85	10	—	0	0	350.75	5.85
5	5.47	11	मंगल	-60	15	283.15	4.72
6	7.6	7	—	0	15	471.19	7.85
7	5.07	12	गुरु	60	0	364.23	6.07
8	8.72	3	—	0	15	537.93	8.97
9	7.63	6	सूर्य, बुध	0	15	472.92	7.88
10	5.93	9	—	0	15	370.69	6.18
11	6.33	8	—	0	0	379.9	6.33
12	11.42	2	शनि	-60	0	625.21	10.42

भाव	समायोजित रैंक
1	5
2	4
3	1
4	11
5	12
6	7
7	10
8	3
9	6
10	9
11	8
12	2

अष्टकवर्ग

पद्धति	BPHS

राशि क्रम

मेष वृषभ मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुम्भ मीन

भिन्नाष्टकवर्ग

	राशि के अनुसार	कुल
सूर्य	2, 4, 6, 4, 5, 1, 3, 6, 4, 4, 4, 5	48
चंद्र	4, 4, 6, 6, 1, 3, 4, 4, 3, 4, 4, 6	49
मंगल	2, 2, 4, 5, 4, 1, 2, 4, 4, 2, 5, 4	39
बुध	3, 4, 7, 4, 5, 4, 4, 4, 5, 5, 6, 3	54
गुरु	4, 8, 5, 6, 3, 3, 6, 4, 3, 6, 6, 2	56
शुक्र	6, 6, 1, 5, 4, 6, 4, 5, 2, 5, 4, 4	52
शनि	5, 4, 3, 5, 3, 1, 4, 4, 1, 2, 5, 2	39
लग्न	3, 4, 3, 5, 3, 4, 6, 4, 5, 3, 4, 5	49

सर्वाष्टकवर्ग

राशि के अनुसार	26, 32, 32, 35, 25, 19, 27, 31, 22, 28, 34, 26
कुल	337

घटाव

	पहले	त्रिकोण	एकाधिपत्य	राशि पिण्ड	ग्रह पिण्ड	शोध्य पिण्ड
सूर्य	2, 4, 6, 4, 5, 1, 3, 6, 4, 4, 4, 5	0, 3, 3, 0, 3, 0, 0, 2, 2, 3, 1, 1	0, 3, 3, 0, 3, 0, 0, 2, 2, 1, 1, 0	134	34	168
चंद्र	4, 4, 6, 6, 1, 3, 4, 4, 3, 4, 4, 6	3, 1, 2, 2, 0, 0, 0, 0, 2, 1, 0, 2	3, 1, 2, 2, 0, 0, 0, 0, 2, 1, 0, 0	78	38	116
मंगल	2, 2, 4, 5, 4, 1, 2, 4, 4, 2, 5, 4	0, 1, 2, 1, 2, 0, 0, 0, 2, 1, 3, 0	0, 1, 2, 1, 2, 0, 0, 0, 2, 1, 1, 0	84	28	112
बुध	3, 4, 7, 4, 5, 4, 4, 4, 5, 5, 6, 3	0, 0, 3, 1, 2, 0, 0, 1, 2, 1, 2, 0	0, 0, 3, 1, 2, 0, 0, 1, 2, 1, 1, 0	90	20	110
गुरु	4, 8, 5, 6, 3, 3, 6, 4, 3, 6, 6, 2	1, 5, 0, 4, 0, 0, 1, 2, 0, 3, 1, 0	1, 5, 0, 4, 0, 0, 1, 1, 0, 1, 1, 0	104	85	189
शुक्र	6, 6, 1, 5, 4, 6, 4, 5, 2, 5, 4, 4	4, 1, 0, 1, 2, 1, 3, 1, 0, 0, 3, 0	1, 1, 0, 1, 2, 1, 3, 1, 0, 0, 3, 0	108	50	158
शनि	5, 4, 3, 5, 3, 1, 4, 4, 1, 2, 5, 2	4, 3, 0, 3, 2, 0, 1, 2, 0, 1, 2, 0	2, 3, 0, 3, 2, 0, 1, 2, 0, 1, 1, 0	115	59	174
लग्न	3, 4, 3, 5, 3, 4, 6, 4, 5, 3, 4, 5	0, 1, 0, 1, 0, 1, 3, 0, 2, 0, 1, 1	0, 1, 0, 1, 0, 1, 3, 0, 2, 0, 1, 0	69	60	129

आयु

पद्धति	BPHS

नक्षत्र आयु

शोध्य सर्वाष्टक	602
आयु इकाइयाँ	156.07
वर्ष	138.45
सर्वाष्टक पूर्व	26, 32, 32, 35, 25, 19, 27, 31, 22, 28, 34, 26
सर्वाष्टक त्रिकोण	4, 13, 5, 9, 3, 0, 0, 5, 0, 9, 7, 0
सर्वाष्टक एकाधिपत्य	4, 13, 5, 9, 3, 0, 0, 4, 0, 7, 7, 0
राशि पिण्ड	408
ग्रह पिण्ड	194

मण्डल आयु

पाए गए प्रेरक	चन्द्र केन्द्र में नहीं और किसी अन्य ग्रह से युत
लागू	हाँ

विस्तृत विभाजन

	शोध्य	सकल	हरण गुणक	हरण टैग	हरण स्तर	घटाया हुआ
सूर्य	168	16.56	0.5	नीच	A	8.28
चंद्र	116	3.07	0.5	Multi-in-sign	A	1.54
मंगल	112	2.04	1	—	—	2.04
बुध	110	1.52	0.5	Multi-in-sign	A	0.76
गुरु	189	22	1	—	—	22
शुक्र	158	13.96	0.5	Multi-in-sign, नीच	A	6.98
शनि	174	18.11	1	—	—	18.11

कुल	59.7
वर्ष	58.85

चक्रपात लागू	नहीं
ग्रहण जाँचा गया	नहीं

पद्धति के नियम · नियम समूह	BPHS
पद्धति के नियम · के समान	—
पद्धति के नियम · नोट	BPHS अध्याय 70 — त्रिकोण और एकाधिपत्य शोधन।

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय शेष

स्वामी	मंगल
वर्ष	4
महीने	7
दिन	11

वर्तमान

की तिथि के अनुसार	2026-11-08
महादशा · स्वामी	गुरु
महादशा · प्रारंभ	2013-05-30
महादशा · अंत	2029-05-30
अंतर्दशा · स्वामी	मंगल
अंतर्दशा · प्रारंभ	2026-01-28
अंतर्दशा · अंत	2027-01-04
प्रत्यन्तर दशा · स्वामी	शुक्र
प्रत्यन्तर दशा · प्रारंभ	2026-09-23
प्रत्यन्तर दशा · अंत	2026-11-19

स्वामियों की तारा

सूर्य	Janma
चंद्र	Janma
मंगल	Parama Mitra
बुध	Janma
गुरु	Pratyak
शुक्र	Janma
शनि	Vadha
राहु	Mitra
केतु	Kshema

महादशाएँ

मंगल

प्रारंभ	1990-10-18
अंत	1995-05-31

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
गुरु	1990-10-18	1990-10-20
शनि	1990-10-20	1991-11-29
बुध	1991-11-29	1992-11-25
केतु	1992-11-25	1993-04-23
शुक्र	1993-04-23	1994-06-23
सूर्य	1994-06-23	1994-10-29
चंद्र	1994-10-29	1995-05-31

राहु

प्रारंभ	1995-05-31
अंत	2013-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
राहु	1995-05-31	1998-02-10
गुरु	1998-02-10	2000-07-06
शनि	2000-07-06	2003-05-13
बुध	2003-05-13	2005-11-29
केतु	2005-11-29	2006-12-18
शुक्र	2006-12-18	2009-12-18
सूर्य	2009-12-18	2010-11-12
चंद्र	2010-11-12	2012-05-13
मंगल	2012-05-13	2013-05-30

गुरु

प्रारंभ	2013-05-30
अंत	2029-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
गुरु	2013-05-30	2015-07-18
शनि	2015-07-18	2018-01-28
बुध	2018-01-28	2020-05-05
केतु	2020-05-05	2021-04-11
शुक्र	2021-04-11	2023-12-11
सूर्य	2023-12-11	2024-09-28
चंद्र	2024-09-28	2026-01-28
मंगल	2026-01-28	2027-01-04
राहु	2027-01-04	2029-05-30

शनि

प्रारंभ	2029-05-30
अंत	2048-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
शनि	2029-05-30	2032-06-02
बुध	2032-06-02	2035-02-10
केतु	2035-02-10	2036-03-21
शुक्र	2036-03-21	2039-05-22
सूर्य	2039-05-22	2040-05-03
चंद्र	2040-05-03	2041-12-02
मंगल	2041-12-02	2043-01-11
राहु	2043-01-11	2045-11-17
गुरु	2045-11-17	2048-05-30

बुध

प्रारंभ	2048-05-30
अंत	2065-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
बुध	2048-05-30	2050-10-27
केतु	2050-10-27	2051-10-24
शुक्र	2051-10-24	2054-08-24
सूर्य	2054-08-24	2055-06-30
चंद्र	2055-06-30	2056-11-28
मंगल	2056-11-28	2057-11-25
राहु	2057-11-25	2060-06-13
गुरु	2060-06-13	2062-09-19
शनि	2062-09-19	2065-05-30

केतु

प्रारंभ	2065-05-30
अंत	2072-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
केतु	2065-05-30	2065-10-26
शुक्र	2065-10-26	2066-12-26
सूर्य	2066-12-26	2067-05-03
चंद्र	2067-05-03	2067-12-02
मंगल	2067-12-02	2068-04-29
राहु	2068-04-29	2069-05-18
गुरु	2069-05-18	2070-04-24
शनि	2070-04-24	2071-06-03
बुध	2071-06-03	2072-05-30

शुक्र

प्रारंभ	2072-05-30
अंत	2092-05-30

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
शुक्र	2072-05-30	2075-09-30
सूर्य	2075-09-30	2076-09-29
चंद्र	2076-09-29	2078-05-31
मंगल	2078-05-31	2079-07-31
राहु	2079-07-31	2082-07-31
गुरु	2082-07-31	2085-03-31
शनि	2085-03-31	2088-05-31
बुध	2088-05-31	2091-04-01
केतु	2091-04-01	2092-05-30

सूर्य

प्रारंभ	2092-05-30
अंत	2098-05-31

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
सूर्य	2092-05-30	2092-09-17
चंद्र	2092-09-17	2093-03-19
मंगल	2093-03-19	2093-07-25
राहु	2093-07-25	2094-06-19
गुरु	2094-06-19	2095-04-07
शनि	2095-04-07	2096-03-19
बुध	2096-03-19	2097-01-23
केतु	2097-01-23	2097-05-31
शुक्र	2097-05-31	2098-05-31

चंद्र

प्रारंभ	2098-05-31
अंत	2108-05-31

अन्तर्दशाएँ

स्वामी	प्रारंभ	अंत
चंद्र	2098-05-31	2099-03-31
मंगल	2099-03-31	2099-10-30
राहु	2099-10-30	2101-05-01
गुरु	2101-05-01	2102-08-31
शनि	2102-08-31	2104-03-31
बुध	2104-03-31	2105-08-30
केतु	2105-08-30	2106-03-31
शुक्र	2106-03-31	2107-11-30
सूर्य	2107-11-30	2108-05-31

योगिनी दशा

प्रणाली	योगिनी

जन्म के समय शेष

योगिनी	Mangala
वर्ष	0
महीने	7
दिन	28

वर्तमान

की तिथि के अनुसार	2026-11-08

महादशा

योगिनी	Mangala
स्वामी	चंद्र
प्रारंभ	2026-06-15
अंत	2027-06-16
चक्र	2

अंतर्दशा

योगिनी	Bhadrika
स्वामी	बुध
प्रारंभ	2026-09-23
अंत	2026-11-12

महादशाएँ

चंद्र

योगिनी	Mangala
प्रारंभ	1990-10-18
अंत	1991-06-16
चक्र	1

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Bhadrika	बुध	1990-10-18	1990-11-13
Ulka	शनि	1990-11-13	1991-01-12
सिद्ध	शुक्र	1991-01-12	1991-03-23
Sankata	राहु	1991-03-23	1991-06-16

सूर्य

योगिनी	Pingala
प्रारंभ	1991-06-16
अंत	1993-06-15
चक्र	1

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Pingala	सूर्य	1991-06-16	1991-07-26
Dhanya	गुरु	1991-07-26	1991-09-24
Bhramari	मंगल	1991-09-24	1991-12-13
Bhadrika	बुध	1991-12-13	1992-03-22
Ulka	शनि	1992-03-22	1992-07-20
सिद्ध	शुक्र	1992-07-20	1992-12-07
Sankata	राहु	1992-12-07	1993-05-16
Mangala	चंद्र	1993-05-16	1993-06-15

गुरु

योगिनी	Dhanya
प्रारंभ	1993-06-15
अंत	1996-06-15
चक्र	1

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Dhanya	गुरु	1993-06-15	1993-09-13
Bhramari	मंगल	1993-09-13	1994-01-11
Bhadrika	बुध	1994-01-11	1994-06-10
Ulka	शनि	1994-06-10	1994-12-07
सिद्ध	शुक्र	1994-12-07	1995-07-05
Sankata	राहु	1995-07-05	1996-03-01
Mangala	चंद्र	1996-03-01	1996-03-31
Pingala	सूर्य	1996-03-31	1996-06-15

मंगल

योगिनी	Bhramari
प्रारंभ	1996-06-15
अंत	2000-06-15
चक्र	1

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Bhramari	मंगल	1996-06-15	1996-11-22
Bhadrika	बुध	1996-11-22	1997-06-10
Ulka	शनि	1997-06-10	1998-02-05
सिद्ध	शुक्र	1998-02-05	1998-11-12
Sankata	राहु	1998-11-12	1999-09-28
Mangala	चंद्र	1999-09-28	1999-11-07
Pingala	सूर्य	1999-11-07	2000-01-26
Dhanya	गुरु	2000-01-26	2000-06-15

बुध

योगिनी	Bhadrika

प्रारंभ	2000-06-15
अंत	2005-06-15
चक्र	1

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Bhadrika	बुध	2000-06-15	2001-02-20
Ulka	शनि	2001-02-20	2001-12-17
सिद्ध	शुक्र	2001-12-17	2002-12-02
Sankata	राहु	2002-12-02	2004-01-06
Mangala	चंद्र	2004-01-06	2004-02-25
Pingala	सूर्य	2004-02-25	2004-06-04
Dhanya	गुरु	2004-06-04	2004-11-01
Bhramari	मंगल	2004-11-01	2005-06-15

शनि

योगिनी	Ulka
प्रारंभ	2005-06-15
अंत	2011-06-16
चक्र	1

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Ulka	शनि	2005-06-15	2006-06-10
सिद्ध	शुक्र	2006-06-10	2007-08-04
Sankata	राहु	2007-08-04	2008-11-26
Mangala	चंद्र	2008-11-26	2009-01-25
Pingala	सूर्य	2009-01-25	2009-05-25
Dhanya	गुरु	2009-05-25	2009-11-21
Bhramari	मंगल	2009-11-21	2010-07-19
Bhadrika	बुध	2010-07-19	2011-06-16

शुक्र

योगिनी	सिद्ध
प्रारंभ	2011-06-16
अंत	2018-06-15
चक्र	1

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
सिद्ध	शुक्र	2011-06-16	2012-10-18
Sankata	राहु	2012-10-18	2014-05-01
Mangala	चंद्र	2014-05-01	2014-07-10
Pingala	सूर्य	2014-07-10	2014-11-27
Dhanya	गुरु	2014-11-27	2015-06-25
Bhramari	मंगल	2015-06-25	2016-03-31
Bhadrika	बुध	2016-03-31	2017-03-16

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Ulka	शनि	2017-03-16	2018-06-15

राहु

योगिनी	Sankata
प्रारंभ	2018-06-15
अंत	2026-06-15
चक्र	1

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Sankata	राहु	2018-06-15	2020-03-16
Mangala	चंद्र	2020-03-16	2020-06-04
Pingala	सूर्य	2020-06-04	2020-11-11
Dhanya	गुरु	2020-11-11	2021-07-09
Bhramari	मंगल	2021-07-09	2022-05-25
Bhadrika	बुध	2022-05-25	2023-06-29
Ulka	शनि	2023-06-29	2024-10-21
सिद्ध	शुक्र	2024-10-21	2026-06-15

चंद्र

योगिनी	Mangala
प्रारंभ	2026-06-15
अंत	2027-06-16
चक्र	2

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Mangala	चंद्र	2026-06-15	2026-06-25
Pingala	सूर्य	2026-06-25	2026-07-15
Dhanya	गुरु	2026-07-15	2026-08-14
Bhramari	मंगल	2026-08-14	2026-09-23
Bhadrika	बुध	2026-09-23	2026-11-12
Ulka	शनि	2026-11-12	2027-01-11
सिद्ध	शुक्र	2027-01-11	2027-03-22
Sankata	राहु	2027-03-22	2027-06-16

सूर्य

योगिनी	Pingala
प्रारंभ	2027-06-16
अंत	2029-06-15
चक्र	2

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Pingala	सूर्य	2027-06-16	2027-07-26
Dhanya	गुरु	2027-07-26	2027-09-24

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Bhramari	मंगल	2027-09-24	2027-12-13
Bhadrika	बुध	2027-12-13	2028-03-22
Ulka	शनि	2028-03-22	2028-07-20
सिद्ध	शुक्र	2028-07-20	2028-12-07
Sankata	राहु	2028-12-07	2029-05-16
Mangala	चंद्र	2029-05-16	2029-06-15

गुरु

योगिनी	Dhanya
प्रारंभ	2029-06-15
अंत	2032-06-15
चक्र	2

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Dhanya	गुरु	2029-06-15	2029-09-13
Bhramari	मंगल	2029-09-13	2030-01-11
Bhadrika	बुध	2030-01-11	2030-06-10
Ulka	शनि	2030-06-10	2030-12-07
सिद्ध	शुक्र	2030-12-07	2031-07-05
Sankata	राहु	2031-07-05	2032-03-01
Mangala	चंद्र	2032-03-01	2032-03-31
Pingala	सूर्य	2032-03-31	2032-06-15

मंगल

योगिनी	Bhramari
प्रारंभ	2032-06-15
अंत	2036-06-15
चक्र	2

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Bhramari	मंगल	2032-06-15	2032-11-22
Bhadrika	बुध	2032-11-22	2033-06-10
Ulka	शनि	2033-06-10	2034-02-05
सिद्ध	शुक्र	2034-02-05	2034-11-12
Sankata	राहु	2034-11-12	2035-09-28
Mangala	चंद्र	2035-09-28	2035-11-07
Pingala	सूर्य	2035-11-07	2036-01-26
Dhanya	गुरु	2036-01-26	2036-06-15

बुध

योगिनी	Bhadrika
प्रारंभ	2036-06-15
अंत	2041-06-15
चक्र	2

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Bhadrika	बुध	2036-06-15	2037-02-20
Ulka	शनि	2037-02-20	2037-12-17
सिद्ध	शुक्र	2037-12-17	2038-12-02
Sankata	राहु	2038-12-02	2040-01-06
Mangala	चंद्र	2040-01-06	2040-02-25
Pingala	सूर्य	2040-02-25	2040-06-04
Dhanya	गुरु	2040-06-04	2040-11-01
Bhramari	मंगल	2040-11-01	2041-06-15

शनि

योगिनी	Ulka
प्रारंभ	2041-06-15
अंत	2047-06-15
चक्र	2

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Ulka	शनि	2041-06-15	2042-06-10
सिद्ध	शुक्र	2042-06-10	2043-08-04
Sankata	राहु	2043-08-04	2044-11-26
Mangala	चंद्र	2044-11-26	2045-01-25
Pingala	सूर्य	2045-01-25	2045-05-25
Dhanya	गुरु	2045-05-25	2045-11-21
Bhramari	मंगल	2045-11-21	2046-07-19
Bhadrika	बुध	2046-07-19	2047-06-15

शुक्र

योगिनी	सिद्ध
प्रारंभ	2047-06-15
अंत	2054-06-15
चक्र	2

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
सिद्ध	शुक्र	2047-06-15	2048-10-17
Sankata	राहु	2048-10-17	2050-04-30
Mangala	चंद्र	2050-04-30	2050-07-09
Pingala	सूर्य	2050-07-09	2050-11-26
Dhanya	गुरु	2050-11-26	2051-06-24
Bhramari	मंगल	2051-06-24	2052-03-30
Bhadrika	बुध	2052-03-30	2053-03-15
Ulka	शनि	2053-03-15	2054-06-15

राहु

योगिनी	Sankata

प्रारंभ	2054-06-15
अंत	2062-06-15
चक्र	2

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Sankata	राहु	2054-06-15	2056-03-16
Mangala	चंद्र	2056-03-16	2056-06-04
Pingala	सूर्य	2056-06-04	2056-11-11
Dhanya	गुरु	2056-11-11	2057-07-09
Bhramari	मंगल	2057-07-09	2058-05-25
Bhadrika	बुध	2058-05-25	2059-06-29
Ulka	शनि	2059-06-29	2060-10-21
सिद्ध	शुक्र	2060-10-21	2062-06-15

चंद्र

योगिनी	Mangala
प्रारंभ	2062-06-15
अंत	2063-06-15
चक्र	3

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Mangala	चंद्र	2062-06-15	2062-06-25
Pingala	सूर्य	2062-06-25	2062-07-15
Dhanya	गुरु	2062-07-15	2062-08-14
Bhramari	मंगल	2062-08-14	2062-09-23
Bhadrika	बुध	2062-09-23	2062-11-12
Ulka	शनि	2062-11-12	2063-01-11
सिद्ध	शुक्र	2063-01-11	2063-03-22
Sankata	राहु	2063-03-22	2063-06-15

सूर्य

योगिनी	Pingala
प्रारंभ	2063-06-15
अंत	2065-06-15
चक्र	3

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Pingala	सूर्य	2063-06-15	2063-07-25
Dhanya	गुरु	2063-07-25	2063-09-23
Bhramari	मंगल	2063-09-23	2063-12-12
Bhadrika	बुध	2063-12-12	2064-03-21
Ulka	शनि	2064-03-21	2064-07-19
सिद्ध	शुक्र	2064-07-19	2064-12-06
Sankata	राहु	2064-12-06	2065-05-15

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Mangala	चंद्र	2065-05-15	2065-06-15

गुरु

योगिनी	Dhanya
प्रारंभ	2065-06-15
अंत	2068-06-15
चक्र	3

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Dhanya	गुरु	2065-06-15	2065-09-13
Bhramari	मंगल	2065-09-13	2066-01-11
Bhadrika	बुध	2066-01-11	2066-06-10
Ulka	शनि	2066-06-10	2066-12-07
सिद्ध	शुक्र	2066-12-07	2067-07-05
Sankata	राहु	2067-07-05	2068-03-01
Mangala	चंद्र	2068-03-01	2068-03-31
Pingala	सूर्य	2068-03-31	2068-06-15

मंगल

योगिनी	Bhramari
प्रारंभ	2068-06-15
अंत	2072-06-15
चक्र	3

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Bhramari	मंगल	2068-06-15	2068-11-22
Bhadrika	बुध	2068-11-22	2069-06-10
Ulka	शनि	2069-06-10	2070-02-05
सिद्ध	शुक्र	2070-02-05	2070-11-12
Sankata	राहु	2070-11-12	2071-09-28
Mangala	चंद्र	2071-09-28	2071-11-07
Pingala	सूर्य	2071-11-07	2072-01-26
Dhanya	गुरु	2072-01-26	2072-06-15

बुध

योगिनी	Bhadrika
प्रारंभ	2072-06-15
अंत	2077-06-15
चक्र	3

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Bhadrika	बुध	2072-06-15	2073-02-20
Ulka	शनि	2073-02-20	2073-12-17

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
सिद्ध	शुक्र	2073-12-17	2074-12-02
Sankata	राहु	2074-12-02	2076-01-06
Mangala	चंद्र	2076-01-06	2076-02-25
Pingala	सूर्य	2076-02-25	2076-06-04
Dhanya	गुरु	2076-06-04	2076-11-01
Bhramari	मंगल	2076-11-01	2077-06-15

शनि

योगिनी	Ulka
प्रारंभ	2077-06-15
अंत	2083-06-15
चक्र	3

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Ulka	शनि	2077-06-15	2078-06-10
सिद्ध	शुक्र	2078-06-10	2079-08-04
Sankata	राहु	2079-08-04	2080-11-26
Mangala	चंद्र	2080-11-26	2081-01-25
Pingala	सूर्य	2081-01-25	2081-05-25
Dhanya	गुरु	2081-05-25	2081-11-21
Bhramari	मंगल	2081-11-21	2082-07-19
Bhadrika	बुध	2082-07-19	2083-06-15

शुक्र

योगिनी	सिद्ध
प्रारंभ	2083-06-15
अंत	2090-06-15
चक्र	3

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
सिद्ध	शुक्र	2083-06-15	2084-10-17
Sankata	राहु	2084-10-17	2086-04-30
Mangala	चंद्र	2086-04-30	2086-07-09
Pingala	सूर्य	2086-07-09	2086-11-26
Dhanya	गुरु	2086-11-26	2087-06-24
Bhramari	मंगल	2087-06-24	2088-03-30
Bhadrika	बुध	2088-03-30	2089-03-15
Ulka	शनि	2089-03-15	2090-06-15

राहु

योगिनी	Sankata
प्रारंभ	2090-06-15
अंत	2098-06-15
चक्र	3

अन्तर्दशाएँ

योगिनी	स्वामी	प्रारंभ	अंत
Sankata	राहु	2090-06-15	2092-03-16
Mangala	चंद्र	2092-03-16	2092-06-04
Pingala	सूर्य	2092-06-04	2092-11-11
Dhanya	गुरु	2092-11-11	2093-07-09
Bhramari	मंगल	2093-07-09	2094-05-25
Bhadrika	बुध	2094-05-25	2095-06-29
Ulka	शनि	2095-06-29	2096-10-21
सिद्ध	शुक्र	2096-10-21	2098-06-15

मांगलिक

मांगलिक	नहीं
संख्या	0
प्रतिशत	0
बल	No Manglik

से

	सन्दर्भ राशि	मंगल राशि	मंगल भाव	मांगलिक	दोष भाव
लग्न	मकर	वृषभ	5	नहीं	1, 2, 4, 7, 8, 12
चंद्र	कन्या	वृषभ	9	नहीं	1, 2, 4, 7, 8, 12
शुक्र	कन्या	वृषभ	9	नहीं	1, 2, 4, 7, 8, 12

स्पष्टीकरण

नियम

मंगल 1ला, 2रा, 4था, 7वाँ, 8वाँ या 12वाँ भाव में, लग्न, चंद्रमा और शुक्र से अलग-अलग गिना गया; जिन भी संदर्भों में यह स्थिति बनती है, वे गिने जाते हैं, और निष्कर्ष यह है कि ऐसे संदर्भ कितने हैं।

निर्णायक

लग्न · मंगल भाव	5
लग्न · मांगलिक	नहीं
लग्न · सन्दर्भ राशि	मकर
चंद्र · मंगल भाव	9
चंद्र · मांगलिक	नहीं
चंद्र · सन्दर्भ राशि	कन्या
शुक्र · मंगल भाव	9
शुक्र · मांगलिक	नहीं
शुक्र · सन्दर्भ राशि	कन्या
संख्या	0
मांगलिक	नहीं

परंपरा

वैदिक विवाह मिलान में प्रयुक्त कुज (मंगल) दोष। भावों पर (कुछ मत 2रे भाव को छोड़ देते हैं) और परिहारों पर मतों में भिन्नता है; manglik-match दो कुंडलियों के बीच परिहारों की जानकारी देता है।

कालसर्प

वर्तमान	नहीं
आंशिक	नहीं
प्रकार	—
राहु भाव	1

अक्ष के बाहर के ग्रह

सूर्य | चंद्र | बुध | गुरु | शुक्र | शनि

विवरण	कोई कालसर्प योग नहीं। ग्रह राहु और केतु के बीच सीमित नहीं हैं।
उपाय	—

स्पष्टीकरण

नियम	सभी सात ग्रह (सूर्य से शनि तक) राहु-केतु अक्ष के एक ओर; आंशिक तब, जब कोई एक अक्ष के बाहर या अक्ष पर स्थित हो।

निर्णायक

वर्तमान	नहीं
आंशिक	नहीं
प्रकार	—
राहु भाव	1

अक्ष के बाहर के ग्रह

सूर्य | चंद्र | बुध | गुरु | शुक्र | शनि

परंपरा

शास्त्रीय ग्रंथों (पराशर, फलदीपिका, सारावली) में परिभाषित नहीं; एक परवर्ती परंपरा, जो उत्तर भारतीय पद्धति में व्यापक रूप से प्रयुक्त है। बारह नामित प्रकार राहु के भाव का अनुसरण करते हैं।

पितृ दोष

वर्तमान	नहीं
शक्ति	—
प्रकार	—
आकलन नहीं किया गया	—

> कोई पितृ दोष नहीं पाया गया। जन्म कुण्डली में सूर्य और चन्द्र राहु, केतु और शनि की पीड़ा से मुक्त हैं।

उपाय	—

स्पष्टीकरण

नियम	सूर्य या चंद्रमा का राहु, केतु या शनि से पीड़ित होना; पाई गई प्रत्येक पीड़ा `types` में सूचीबद्ध है।

निर्णायक

वर्तमान	नहीं
शक्ति	—

प्रकार	—
आकलन नहीं किया गया	—

परंपरा	एक परवर्ती परंपरा जिसकी कोई एकल शास्त्रीय परिभाषा नहीं है; जाँची गई पीड़ाएँ सामान्य रूप से प्रयुक्त पीड़ाएँ ही हैं।

साढ़े साती

चंद्र राशि	कन्या
स्कैन · वर्ष से	1985
स्कैन · वर्ष तक	2090
की तिथि के अनुसार	2026-11-08
वर्तमान	—

अगली साढ़े साती

प्रकार	साढ़े साती
चरण	Rising
शनि राशि	सिंह
प्रारंभ	2036-08-27T15:06:45+00:00
अंत	2038-10-22T11:26:48+00:00
दिन	785.85
लघु अवधि	नहीं
मूर्ति	Tamra Murti
मूर्ति शुभ	नहीं
स्कैन से पहले आरम्भ	नहीं

दशाएँ

#	प्रकार	चरण	शनि राशि	प्रारंभ	अंत	दिन	लघु अवधि
1	साढ़े साती	Setting	तुला	1985-05-31T21:04:29+00:00	1985-09-16T23:40:58+00:00	108.11	हाँ
2	Kantaka	चतुर्थ	धनु	1987-12-16T21:22:41+00:00	1990-03-20T20:34:30+00:00	824.97	नहीं
3	Kantaka	चतुर्थ	धनु	1990-06-20T11:43:20+00:00	1990-12-14T19:37:34+00:00	177.33	हाँ
4	Ashtama	Eighth	मेष	1998-04-17T07:36:07+00:00	2000-06-06T19:28:32+00:00	781.49	नहीं
5	साढ़े साती	Rising	सिंह	2006-11-01T01:43:55+00:00	2007-01-10T12:32:10+00:00	70.45	हाँ
6	साढ़े साती	Rising	सिंह	2007-07-15T23:16:21+00:00	2009-09-09T18:31:02+00:00	786.8	नहीं
7	साढ़े साती	शिखर	कन्या	2009-09-09T18:31:02+00:00	2011-11-15T04:42:37+00:00	796.42	नहीं
8	साढ़े साती	Setting	तुला	2011-11-15T04:42:37+00:00	2012-05-16T01:02:49+00:00	182.85	हाँ
9	साढ़े साती	शिखर	कन्या	2012-05-16T01:02:49+00:00	2012-08-04T03:18:35+00:00	80.09	हाँ
10	साढ़े साती	Setting	तुला	2012-08-04T03:18:35+00:00	2014-11-02T15:24:49+00:00	820.5	नहीं
11	Kantaka	चतुर्थ	धनु	2017-01-26T14:01:05+00:00	2017-06-20T23:07:51+00:00	145.38	हाँ
12	Kantaka	चतुर्थ	धनु	2017-10-26T09:58:24+00:00	2020-01-24T04:26:47+00:00	819.77	नहीं
13	Ashtama	Eighth	मेष	2027-06-02T23:58:14+00:00	2027-10-20T01:42:13+00:00	139.07	हाँ
14	Ashtama	Eighth	मेष	2028-02-23T13:54:14+00:00	2029-08-08T07:04:08+00:00	531.72	नहीं
15	Ashtama	Eighth	मेष	2029-10-05T11:20:44+00:00	2030-04-17T03:38:37+00:00	193.68	हाँ
16	साढ़े साती	Rising	सिंह	2036-08-27T15:06:45+00:00	2038-10-22T11:26:48+00:00	785.85	नहीं

#	प्रकार	चरण	शनि राशि	प्रारंभ	अंत	दिन	लघु अवधि
17	साढ़े साती	शिखर	कन्या	2038-10-22T11:26:48+00:00	2039-04-05T15:33:14+00:00	165.17	हाँ
18	साढ़े साती	Rising	सिंह	2039-04-05T15:33:14+00:00	2039-07-12T20:30:21+00:00	98.21	हाँ
19	साढ़े साती	शिखर	कन्या	2039-07-12T20:30:21+00:00	2041-01-27T21:42:06+00:00	565.05	नहीं
20	साढ़े साती	Setting	तुला	2041-01-27T21:42:06+00:00	2041-02-06T09:22:24+00:00	9.49	हाँ
21	साढ़े साती	शिखर	कन्या	2041-02-06T09:22:24+00:00	2041-09-26T00:52:11+00:00	231.65	हाँ
22	साढ़े साती	Setting	तुला	2041-09-26T00:52:11+00:00	2043-12-11T17:54:43+00:00	806.71	नहीं
23	साढ़े साती	Setting	तुला	2044-06-23T02:12:44+00:00	2044-08-30T01:30:03+00:00	67.97	हाँ
24	Kantaka	चतुर्थ	धनु	2046-12-07T18:45:11+00:00	2049-03-06T11:05:04+00:00	819.68	नहीं
25	Kantaka	चतुर्थ	धनु	2049-07-09T19:53:00+00:00	2049-12-04T02:17:33+00:00	147.27	हाँ
26	Ashtama	Eighth	मेष	2057-04-07T02:26:58+00:00	2059-05-27T18:19:11+00:00	780.66	नहीं
27	साढ़े साती	Rising	सिंह	2065-10-12T22:34:17+00:00	2066-02-03T15:53:54+00:00	113.72	हाँ
28	साढ़े साती	Rising	सिंह	2066-07-03T05:47:24+00:00	2068-08-30T02:07:37+00:00	788.85	नहीं
29	साढ़े साती	शिखर	कन्या	2068-08-30T02:07:37+00:00	2070-11-04T10:05:51+00:00	796.33	नहीं
30	साढ़े साती	Setting	तुला	2070-11-04T10:05:51+00:00	2073-02-05T13:29:49+00:00	824.14	नहीं
31	साढ़े साती	Setting	तुला	2073-03-31T03:24:45+00:00	2073-10-23T12:32:46+00:00	206.38	हाँ
32	Kantaka	चतुर्थ	धनु	2076-01-16T11:28:26+00:00	2076-07-10T18:35:35+00:00	176.3	हाँ
33	Kantaka	चतुर्थ	धनु	2076-10-11T17:01:48+00:00	2079-01-14T19:45:51+00:00	825.11	नहीं
34	Ashtama	Eighth	मेष	2086-05-21T14:48:09+00:00	2086-11-10T01:06:07+00:00	172.43	हाँ
35	Ashtama	Eighth	मेष	2087-02-08T03:06:34+00:00	2088-07-18T01:20:48+00:00	525.93	नहीं
36	Ashtama	Eighth	मेष	2088-10-31T01:44:09+00:00	2089-04-05T11:19:30+00:00	156.4	हाँ

#	मूर्ति	मूर्ति शुभ	स्कैन से पहले आरम्भ
1	Rajat Murti	हाँ	नहीं
2	Rajat Murti	हाँ	नहीं
3	Rajat Murti	हाँ	नहीं
4	Loha Murti	नहीं	नहीं
5	Swarn Murti	हाँ	नहीं
6	Swarn Murti	हाँ	नहीं
7	Loha Murti	नहीं	नहीं
8	Tamra Murti	नहीं	नहीं
9	Tamra Murti	नहीं	नहीं
10	Swarn Murti	हाँ	नहीं
11	Loha Murti	नहीं	नहीं
12	Loha Murti	नहीं	नहीं
13	Loha Murti	नहीं	नहीं
14	Rajat Murti	हाँ	नहीं
15	Loha Murti	नहीं	नहीं
16	Tamra Murti	नहीं	नहीं
17	Swarn Murti	हाँ	नहीं
18	Loha Murti	नहीं	नहीं
19	Tamra Murti	नहीं	नहीं
20	Tamra Murti	नहीं	नहीं
21	Loha Murti	नहीं	नहीं
22	Swarn Murti	हाँ	नहीं
23	Rajat Murti	हाँ	नहीं

#	मूर्ति	मूर्ति शुभ	स्कैन से पहले आरम्भ
24	Tamra Murti	नहीं	नहीं
25	Rajat Murti	हाँ	नहीं
26	Rajat Murti	हाँ	नहीं
27	Tamra Murti	नहीं	नहीं
28	Rajat Murti	हाँ	नहीं
29	Swarn Murti	हाँ	नहीं
30	Tamra Murti	नहीं	नहीं
31	Loha Murti	नहीं	नहीं
32	Rajat Murti	हाँ	नहीं
33	Tamra Murti	नहीं	नहीं
34	Loha Murti	नहीं	नहीं
35	Tamra Murti	नहीं	नहीं
36	Loha Murti	नहीं	नहीं

स्पष्टीकरण

नियम	शनि का जन्म चंद्र राशि से 12वीं, 1ली और 2री राशि में गोचर (साढ़ेसाती: प्रथम, मध्य और अंतिम चरण); यहाँ चंद्रमा कन्या में है।

निर्णायक

चंद्र राशि	कन्या
की तिथि के अनुसार	2026-11-08
चालू	—

परंपरा
जन्म चंद्र राशि से गिना गया गोचर, जो वैदिक पद्धति में मानक है। शनि की वक्री चाल के कारण बनने वाली कुछ महीनों से छोटी अवधि को short_spell के रूप में चिह्नित किया जाता है।

राज योग

समूह	राज योग
जाँचा गया	4
उपस्थित संख्या	4

योग

नाम	वर्तमान	शक्ति	विवरण	विवरण
राजयोग — चन्द्र (7वें भाव का स्वामी) + शुक्र (5वें भाव का स्वामी)	हाँ	Strong	चन्द्र (7वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) और शुक्र (5वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) युति हैं।	7वें भाव (केन्द्र) के स्वामी का 5वें भाव (त्रिकोण) के स्वामी से संबंध शास्त्रीय राजयोग बनाता है।
राजयोग — चन्द्र (7वें भाव का स्वामी) + बुध (9वें भाव का स्वामी)	हाँ	Strong	चन्द्र (7वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) और बुध (9वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) युति हैं।	7वें भाव (केन्द्र) के स्वामी का 9वें भाव (त्रिकोण) के स्वामी से संबंध शास्त्रीय राजयोग बनाता है।

नाम	वर्तमान	शक्ति	विवरण	विवरण
राजयोग — शुक्र (10वें और 5वें भाव का स्वामी)	हाँ	Strong	शुक्र 10वें (केन्द्र) और 5वें (त्रिकोण) दोनों भावों का स्वामी है। कन्या (भाव 9) में स्थित।	केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी ग्रह शक्तिशाली राजयोग देता है।
राजयोग — शुक्र (10वें भाव का स्वामी) + बुध (9वें भाव का स्वामी)	हाँ	Strong	शुक्र (10वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) और बुध (9वें भाव का स्वामी, कन्या/H9 में) युति हैं।	10वें भाव (केन्द्र) के स्वामी का 9वें भाव (त्रिकोण) के स्वामी से संबंध शास्त्रीय राजयोग बनाता है।

धन योग

समूह	Dhana yogas
जाँचा गया	8
उपस्थित संख्या	1

योग

नाम	वर्तमान	शक्ति	विवरण	विवरण
धन योग — 1ले, 2रे, 11वें भाव के स्वामियों का संबंध	नहीं	—	L1=शनि(H12), L2=शनि(H12), L11=मंगल(H5)।	1ले, 2रे और 11वें भाव के स्वामियों का परस्पर संबंध — शास्त्रीय धन योग।
धन योग — 2रे और 11वें भाव के स्वामी केन्द्र/त्रिकोण में	नहीं	—	द्वितीयेश शनि भाव 12 में ✗, एकादशेश मंगल भाव 5 में ✓।	2रे (धन) और 11वें (लाभ) भाव के स्वामी केन्द्र या त्रिकोण में स्थित।
धन योग — गुरु 2रे/11वें भाव में (स्वराशि/उच्च)	नहीं	—	गुरु भाव 7 में, राशि कर्क।	गुरु 2रे या 11वें भाव में स्वराशि या उच्च राशि में।

नाम	वर्तमान	शक्ति	विवरण	विवरण
Lakshmi Yoga	नहीं	—	नवमेश बुध कन्या राशि में (H9) स्वक्षेत्री ✓ केंद्र/त्रिकोण ✓, शुक्र ✗ कन्या में।	9वें भाव का स्वामी केन्द्र/त्रिकोण में स्वराशि में, शुक्र स्वराशि/उच्च में बलवान। लक्ष्मी की कृपा।
Chandra-Mangala Yoga	नहीं	—	चन्द्र (भाव 9) और मंगल (भाव 5) युति में नहीं।	चन्द्र और मंगल की युति। धन से संबंध के कारण यह नाम।
Kubera Yoga	नहीं	—	गुरु (भाव 7) और शुक्र (भाव 9) द्वितीय भाव में।	धन के 2रे भाव में गुरु और शुक्र की युति — धन के देवता कुबेर के नाम पर।
Vasumati Yoga	नहीं	—	उपचय भावों में शुभ ग्रह: कोई नहीं।	नैसर्गिक शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) उपचय भावों (3,6,10,11) में।
Gaja-Kesari Dhana variant	हाँ	Moderate	गुरु (भाव 7) और चन्द्र (भाव 9) दोनों केन्द्र/त्रिकोण में।	गुरु और चन्द्र दोनों केन्द्र या त्रिकोण में — गजकेसरी योग का प्रबल धन रूप।

नाम	वर्तमान	शक्ति	विवरण	विवरण

महापुरुष योग

समूह	Panch maha
जाँचा गया	5
उपस्थित संख्या	1

योग

नाम	वर्तमान	शक्ति	विवरण	विवरण
Hamsa Yoga	हाँ	Strong	गुरु कर्क में (भाव 7) — स्वराशि/उच्च, केन्द्र।	गुरु किसी केन्द्र भाव में स्वराशि (धनु/मीन) या उच्च राशि (कर्क) में।
Malavya Yoga	नहीं	—	शुक्र किसी केन्द्र भाव में स्वराशि (वृषभ/तुला) या उच्च राशि (मीन) में।	शुक्र किसी केन्द्र भाव में स्वराशि (वृषभ/तुला) या उच्च राशि (मीन) में।
Ruchaka Yoga	नहीं	—	मंगल किसी केन्द्र भाव में स्वराशि (मेष/वृश्चिक) या उच्च राशि (मकर) में।	मंगल किसी केन्द्र भाव में स्वराशि (मेष/वृश्चिक) या उच्च राशि (मकर) में।

नाम	वर्तमान	शक्ति	विवरण	विवरण
Bhadra Yoga	नहीं	Weak	बुध किसी केन्द्र भाव में स्वराशि (मिथुन/कन्या) या उच्च राशि (कन्या) में।	बुध किसी केन्द्र भाव में स्वराशि (मिथुन/कन्या) या उच्च राशि (कन्या) में।
Shasha Yoga	नहीं	—	शनि किसी केन्द्र भाव में स्वराशि (मकर/कुम्भ) या उच्च राशि (तुला) में।	शनि किसी केन्द्र भाव में स्वराशि (मकर/कुम्भ) या उच्च राशि (तुला) में।

चन्द्र योग

समूह	Chandra yogas
जाँचा गया	6
उपस्थित संख्या	0

योग

Sunapha Yoga

वर्तमान	नहीं
शक्ति	—
विवरण	चन्द्र से द्वितीय भाव (भाव 10) में ग्रह: कोई नहीं।
विवरण	चन्द्र से 2रे भाव में सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह।
प्रभाव	स्व-अर्जित धन, राजा या उसके समान, बुद्धिमान, अच्छी प्रतिष्ठा। प्रबल व्यक्तित्व।

Anapha Yoga

वर्तमान	नहीं
शक्ति	—
विवरण	चन्द्र से द्वादश भाव (भाव 8) में ग्रह: कोई नहीं।
विवरण	चन्द्र से 12वें भाव में सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह।

प्रभाव	सुगठित शरीर, स्वस्थ, भावुक, अच्छा चरित्र, शक्तिशाली, मानवतावादी।

Durudhara Yoga

वर्तमान	नहीं
शक्ति	—
विवरण	चन्द्र से द्वितीय: कोई नहीं, चन्द्र से द्वादश: कोई नहीं।
विवरण	चन्द्र के दोनों ओर ग्रह (चन्द्र से 2रे और 12वें भाव में)।
प्रभाव	धनवान, सुखों का भोग करने वाला, उदार, राजा/राज्य का सेवक। अत्यंत भाग्यशाली।

Kemadruma Yoga

वर्तमान	नहीं
शक्ति	—

विवरण
चन्द्र भाव 9 में; चन्द्र से 2रा: भाव 10, चन्द्र से 12वाँ: भाव 8। चन्द्र के दोनों ओर सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह नहीं है, किंतु केमद्रुम भंग होता है, कारण: चन्द्र से केन्द्र में स्थित ग्रह: बुध, शुक्र, शनि; कल्पद्रुम: लग्न से केन्द्रों में 2 ग्रह; चन्द्र से युत या उस पर दृष्टि डालने वाला नैसर्गिक शुभ ग्रह: बुध, शुक्र।

विवरण	चन्द्र से 2रे या 12वें भाव में सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह नहीं — चन्द्र अकेला।
प्रभाव	निर्धनता, दुःख, मानसिक एकाकीपन, दूसरों पर निर्भरता। जीवन में कठिन परिस्थितियाँ।

Adhi Yoga

वर्तमान	नहीं
शक्ति	—
विवरण	चन्द्र से षष्ठ/सप्तम/अष्टम में शुभ ग्रह: कोई नहीं।
विवरण	नैसर्गिक शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) चन्द्र से 6ठे, 7वें, 8वें भाव में।
प्रभाव	विनम्र, समृद्ध, शत्रुओं को पराजित करने वाला। यदि सभी 3 शुभ ग्रह हों: मंत्री/प्रमुख/राजा।

Chandra-Mangala Yoga

वर्तमान	नहीं
शक्ति	—
विवरण	चन्द्र और मंगल एक ही भाव में (भाव 9)।
विवरण	किसी भी भाव में चन्द्र और मंगल की युति।
प्रभाव	व्यापार, अचल संपत्ति, माता से धन। उद्यमशील प्रवृत्ति। आर्थिक महत्वाकांक्षा।

सूर्य योग

समूह	Surya yogas
जाँचा गया	4
उपस्थित संख्या	1

योग

नाम	वर्तमान	शक्ति	विवरण	विवरण
Veshi Yoga	नहीं	—	सूर्य से द्वितीय भाव (भाव 11) में ग्रह: कोई नहीं।	सूर्य से 2रे भाव में चन्द्र के अतिरिक्त कोई ग्रह।

नाम	वर्तमान	शक्ति	विवरण	विवरण
Voshi Yoga	हाँ	Moderate	सूर्य से द्वादश भाव (भाव 9) में ग्रह: बुध, शुक्र।	सूर्य से 12वें भाव में चन्द्र के अतिरिक्त कोई ग्रह।
Ubhayachari Yoga	नहीं	—	सूर्य से द्वितीय: कोई नहीं, सूर्य से द्वादश: बुध, शुक्र।	सूर्य के दोनों ओर ग्रह (सूर्य से 2रे और 12वें भाव में)।
Budha-Aditya Yoga	नहीं	—	सूर्य तुला में (भाव 10), बुध कन्या में (भाव 9) — भिन्न राशियाँ।	सूर्य और बुध एक ही राशि में — बुद्धिमत्तापूर्ण प्रशासनिक क्षमता।

प्रकृति

मुख्य वाक्यांश	मैं उपयोग करता हूँ।
सबसे बड़ी प्रतिभा	अनुशासन और सहनशक्ति।
सबसे बड़ी कमजोरी	रूखापन और अत्यधिक सावधानी।
महत्वाकांक्षा	प्रतिष्ठा और उपलब्धि।

पारंपरिक लक्षण

- मकर लग्न का स्वामी शनि है, जो राशिचक्र का कठोर अनुशासक है; अतः जातक अनुशासित, उत्तरदायी और अत्यंत महत्वाकांक्षी होगा।
- वह व्यावहारिक होगा और सदा परिणामों तथा दीर्घकालिक लाभों के संदर्भ में सोचेगा।
- वह धैर्यवान होगा और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अनेक वर्षों तक कड़ी मेहनत करने को तैयार रहेगा।
- वह व्यवस्थित होगा और समय तथा संसाधनों का कुशलता से प्रबंधन करेगा।
- वह महत्वाकांक्षी होगा और करियर तथा सामाजिक प्रतिष्ठा में अपने लिए ऊँचे लक्ष्य निर्धारित करेगा।
- वह संकोची होगा और अजनबियों के सामने आसानी से भावनाएँ प्रकट नहीं करेगा।
- वह विश्वसनीय होगा और सदा अपनी प्रतिबद्धताएँ पूरी करेगा।
- उसके मन में परंपरा, पदानुक्रम और स्थापित व्यवस्थाओं के प्रति सम्मान होगा।
- वह मितव्ययी होगा और जीवन के सभी क्षेत्रों में अपव्यय से बचेगा।
- वह रूखा या दूर-दूर रहने वाला प्रतीत हो सकता है, परंतु जिन पर विश्वास करता है उनके प्रति गहराई से निष्ठावान होगा।
- आयु के साथ उसमें निखार आएगा और उसे प्रायः अपनी सबसे बड़ी सफलताएँ जीवन के उत्तरार्ध में मिलेंगी।
- उसे वर्तमान का आनंद लेना और सुख को सदा भविष्य के लिए न टालना सीखना होगा।

आधुनिक लक्षण

- मनोवैज्ञानिक रूप से मकर लग्न विश्व-स्तरीय कर्तव्यनिष्ठा दर्शाता है — राशिचक्र का सबसे विश्वसनीय, आत्म-अनुशासित और परिणाम-केंद्रित स्वरूप।
- आधुनिक करियर की शक्तियाँ: कॉर्पोरेट प्रबंधन, वित्त, सरकार, इंजीनियरिंग और कोई भी संरचित, दीर्घकालिक परिणाम-केंद्रित क्षेत्र उनके समर्पण को पुरस्कृत करते हैं।
- वे काम और कर्तव्य के लिए भावनात्मक अभिव्यक्ति और व्यक्तिगत आनंद को टाल देते हैं — सचेत रूप से कार्य-जीवन संतुलन का अभ्यास और उपलब्धियों का उत्सव मनाना आवश्यक है।
- संबंधों में वे स्थिर और गहराई से निष्ठावान होते हैं, किंतु उन्हें आत्मीयता, भावनात्मक कोमलता और भावनात्मक उपलब्धता को खुलकर व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है।
- उनका विकास-वक्र वास्तव में ऊर्ध्वमुखी होता है — आयु के साथ उनमें उल्लेखनीय सुधार होता है और वे समय के साथ ज्ञान तथा भौतिक संसाधन दोनों निरंतर संचित करते हैं।
- आधुनिक स्वास्थ्य: हड्डियों और जोड़ों का स्वास्थ्य, दाँतों की देखभाल और त्वचा मुख्य ध्यान देने योग्य क्षेत्र हैं। अवसाद की प्रवृत्ति और ठंड के प्रति संवेदनशीलता पर पहले से ही निगरानी रखनी चाहिए।

स्वरूप

शास्त्रीय

मकर लग्न का स्वामी शनि है। बृहज्जातक और फलदीपिका के अनुसार जातक मध्यम से लंबे कद का होगा, उसका ढाँचा दुबला, हड्डीदार और कोणीय होगा, जो शनि के संयमी और अनुशासित स्वभाव की विशेषता है। युवावस्था में शरीर का ढाँचा दुबला-पतला और कुछ कृशकाय होता है, किंतु आयु के साथ बल और भराव बढ़ता है — मकर जातकों की शारीरिक स्थिति प्रायः आयु बढ़ने के साथ सुधरती है। चेहरा लंबा और संकरा होता है, गाल की हड्डियाँ ऊँची और उभरी हुई, ठोड़ी नुकीली और भाव गंभीर व विचारशील होता है। आँखें गहरी धँसी हुई, गंभीर, बुद्धिमान और भेदक होती हैं, जिनमें शांत अधिकार और ज्ञान का भाव होता है। रंग गहरा, साँवला या पीलापन लिए होता है और त्वचा रूखी, खुरदरी और कुछ मोटी होती है। सारावली के अनुसार मकर जातक के जोड़, घुटने और हड्डियाँ विशेष रूप से उभरी हुई होती हैं और उनसे जुड़ी स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं। दाँत उभरे हुए हो सकते हैं और नाक प्रायः तोते जैसी या नुकीली होती है। बाल सामान्यतः काले, मोटे और सीधे होते हैं। जातक पारिजात के अनुसार जातक अपनी आयु से अधिक गंभीरता, अधिकार, अनुभव और परिपक्व ज्ञान का आभास देता है। चाल स्थिर और सधी हुई होती है। प्रकृति वात-प्रधान होती है, जो दुबला शरीर, रूखी त्वचा, ठंड के प्रति संवेदनशीलता तथा जोड़ों और हड्डियों से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं की प्रवृत्ति देती है।

लक्षण

- जातक मध्यम से लंबे कद का होगा तथा उसका शरीर दुबला, हड्डीदार और कोणीय होगा।
- चेहरा लंबा होगा, गाल की हड्डियाँ ऊँची, ठुड्डी नुकीली और भाव गंभीर होगा।
- आँखें गहरी धँसी, गंभीर और बुद्धिमत्तापूर्ण होती हैं तथा उनमें शांत अधिकार का भाव होता है।
- वर्ण गहरा, साँवला या पीलापन लिए होगा और त्वचा रूखी हो सकती है।
- जोड़, घुटने और हड्डियाँ उभरी हुई होती हैं; आयु के साथ शरीर धीरे-धीरे अधिक मज़बूत होता जाता है।
- बाल सामान्यतः गहरे रंग के और सीधे होते हैं; दाँत उभरे हुए हो सकते हैं।
- जातक से गंभीरता, अधिकार और परिपक्व अनुभव का भाव झलकता है।

आधुनिक

मकर लग्न के जातक की प्रकृति वात-प्रधान होती है, जिसमें शनि शारीरिक संरचना, हड्डियों और दीर्घायु को नियंत्रित करता है। अस्थि-तंत्र — हड्डियाँ, जोड़, घुटने, दाँत और त्वचा — स्वास्थ्य का मुख्य ध्यान-क्षेत्र है और इस पर सावधान, निरंतर और दीर्घकालीन ध्यान देना आवश्यक है। जातक की प्रकृति धीमी किंतु स्थिर होती है और अनुशासित दीर्घकालीन स्वास्थ्य-देखभाल पर असाधारण रूप से अच्छी प्रतिक्रिया देती है। ठंड, रूखापन और अकेलापन इस प्रकृति को उल्लेखनीय रूप से हानि पहुँचाते हैं और इनसे सावधानी से बचना चाहिए। जातक को गठिया, अस्थि-सुषिरता (ऑस्टियोपोरोसिस), घुटनों की समस्याएँ, दाँतों की समस्याएँ, त्वचा रोग, और अकेलेपन या लंबे तनाव में अवसाद की प्रवृत्ति होती है। जातक को गर्म और पौष्टिक आहार, नियमित तिल के तेल से स्व-मालिश, नियमित नींद की आदतें, योग और भार-वहन व्यायाम जैसी मेरुदंड, घुटनों और जोड़ों की मज़बूती पर केंद्रित व्यवस्थित शारीरिक गतिविधि, तथा ठंडे, नम वातावरण से सचेत रूप से बचने से बहुत लाभ होता है। कैल्शियम, विटामिन डी और मैग्नीशियम पूरक लेने पर विचार करना चाहिए। सामाजिक जुड़ाव और स्नेहपूर्ण संबंध मनोवैज्ञानिक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो इस प्रकृति में शारीरिक स्वास्थ्य को सीधे सहारा देती है।

नक्षत्र

नक्षत्र	चित्रा
स्वामी	मंगल
पद	2

चंद्र राशि	कन्या
चंद्र राशि स्वामी	बुध
जन्म अक्षर	Po
देवता	Tvashta (Divine Craftsman)
गण	Rakshasa (Fierce)
योनि	Vyaghra (Tiger)
वर्ण	Farmer
नाड़ी	Pitta (Madhya)

फलादेश

पराशरी	चित्रा नक्षत्र में जन्मा जातक सजीले वस्त्र और मालाएँ धारण करने वाला, सुंदर और आकर्षक नेत्रों वाला होगा। उसे सजावट और ललित कलाओं का शौक होगा।

यवनाचार्य

चित्रा में जन्म लेने वाले जातक में कलात्मक और सौंदर्यपरक संवेदनशीलता होगी। वह सौंदर्य के सभी रूपों की ओर आकर्षित होगा और उसमें डिज़ाइन, वास्तुकला और दृश्य कलाओं की प्रतिभा होगी।

गार्गी	गार्गी संहिता के अनुसार चित्रा में जन्मा जातक सुंदर, आकर्षक और चुंबकीय व्यक्तित्व वाला होगा। वह सुंदर वस्तुएँ रचने में कुशल होगा और समाज में लोकप्रिय होगा।
माधव	इस नक्षत्र का स्वामी मंगल है। जातक गतिशील और रचनात्मक होगा। वह ऊर्जा और कलात्मकता को मिलाकर अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करेगा।

शास्त्रीय संश्लेषण

चित्रा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति सजावट में कुशल, विविध कलाओं में निपुण, चमकीले और सुंदर वस्त्र पहनने का शौकीन तथा देखने में आकर्षक होता है। शास्त्रों के अनुसार ऐसे जातक को सौंदर्य, रचना और सौंदर्यशास्त्र से प्रेम होता है। वह सृजनशील, कलात्मक प्रतिभा से युक्त और आकार तथा अनुपात की स्वाभाविक परख रखने वाला होता है। एक अन्य शास्त्रीय मत के अनुसार चित्रा जातक स्वाभाविक कलाकार और रचनाकार होता है — जिसे शिल्पी देवता त्वष्टा से सुंदर और जटिल रूप रचने का वरदान प्राप्त है।

आधुनिक

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति में सौंदर्य की पैनी दृष्टि और सुंदर, सामंजस्यपूर्ण वस्तुएँ रचने की स्वाभाविक प्रतिभा होती है। वह अपने शिल्प में पूर्णतावादी, गुणवत्ता के प्रति समर्पित और आकार, अनुपात तथा रचना की स्वाभाविक समझ रखने वाला होता है। वह स्वतंत्र, गतिशील और प्रायः आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। उसे अपनी क्षमताओं पर गर्व हो सकता है और उसे अहंकार से बचना चाहिए। वास्तुकला, ग्राफ़िक डिज़ाइन, फ़ैशन, आभूषण, फ़िल्म-निर्माण, दृश्य कलाएँ या सौंदर्यगत निपुणता की माँग करने वाला कोई भी क्षेत्र उसके लिए उपयुक्त है। वह सुंदर लोगों और सुंदर वातावरण की ओर आकर्षित होता है।

पारंपरिक लक्षण

- जातक सुंदर वस्त्र और मालाएँ धारण करेगा। वह आकर्षक होगा और उसकी आँखें मोहक तथा भावपूर्ण होंगी।
- वह सजावट और ललित कलाओं का शौकीन होगा। उसमें स्वाभाविक सौंदर्य-बोध होगा।
- उसमें कलात्मक और सौंदर्यपरक संवेदनशीलता होगी। वह सौंदर्य के सभी रूपों की ओर आकर्षित होगा।
- वह डिज़ाइन, वास्तुकला, दृश्य कलाओं और सुंदर वस्तुओं के सृजन में प्रतिभाशाली होगा।
- वह सुंदर, मोहक और दूसरों के लिए चुंबकीय रूप से आकर्षक होगा। वह समाज में लोकप्रिय होगा।
- वह गतिशील और सृजनशील होगा। वह ऊर्जा और कलात्मकता को जोड़कर अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय कृतियाँ रचेगा।

आधुनिक लक्षण

- चित्रा नक्षत्र के जातक मंगल की गतिशील ऊर्जा को त्वष्टा (दिव्य शिल्पी) की सृजनात्मक प्रतिभा के साथ जोड़ते हैं — वे राशिचक्र के कलाकार और वास्तुकार हैं।
- वे वास्तुकला, आंतरिक सज्जा, फ़ैशन, आभूषण निर्माण, दृश्य कलाओं, फ़िल्म और ऐसे किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट होते हैं जहाँ सौंदर्य-बोध और सृजन का संगम होता है।
- सौंदर्य के लिए उनका मानक असाधारण रूप से ऊँचा होता है — वे वह देखते हैं जो दूसरों से छूट जाता है और परिष्कार के ऐसे स्तर पर सृजन करते हैं जो अलग दिखाई देता है।
- वे स्वाभाविक रूप से गतिशील होते हैं — सृजनात्मक परियोजनाओं के लिए सक्रिय, ऊर्जावान भागीदारी की आवश्यकता होती है और वे अपने सृजनात्मक कार्य में पूर्ण उत्साह लाते हैं।
- संबंधों में वे सुंदर, परिष्कृत साथियों की ओर आकर्षित होते हैं और सौंदर्य से समृद्ध साझा वातावरण के निर्माण में निवेश करते हैं।

पद पठन

धातु	Silver
गुण	Most auspicious

पाठ
जन्म के समय लग्न से 2रे, 5वें या 9वें भाव में स्थित चन्द्र चाँदी का पाया (रजत पाया) देता है। इसे सबसे शुभ पाया माना जाता है, जो समृद्धि, सौभाग्य और सुख से जुड़ा है। जातक को जीवन भर सुखद स्वभाव, पारिवारिक सुख-सुविधा और स्थिर कल्याण का वरदान प्राप्त होता है।

स्वास्थ्य
चित्रा नक्षत्र उदर, गुर्दों, कमर और निचली पीठ के क्षेत्र को नियंत्रित करता है। जब पाप ग्रह इस नक्षत्र को प्रभावित करते हैं, तो जातक को गुर्दे की समस्याएँ, मूत्र रोग और निचली पीठ में दर्द हो सकता है।

उपाय
विश्वकर्मा पूजा के दिन विश्वकर्मा (दिव्य शिल्पी) की पूजा करें। मंगलवार को लाल पुष्प अर्पित करें। मंगल बीज मंत्र (ॐ अंगारकाय नमः) का 108 बार जाप करें। अपने हाथों से कुछ सुंदर रचना करना इस नक्षत्र के लिए एक सार्थक आध्यात्मिक साधना है।

भाव

भाव प्रणाली	Whole sign

भाव

भाव 1

स्वामी	शनि
भाव में स्वामी	12

फलादेश
जब प्रथम भाव का स्वामी द्वादश भाव में हो, तो जातक का जीवन प्रायः उसे जन्मस्थान से दूर — विदेशों, आश्रमों या एकांत स्थानों तक — ले जाएगा। जातक को आर्थिक हानि और आय से अधिक व्यय का अनुभव हो सकता है। फिर भी, आध्यात्मिक विकास, आंतरिक चिंतन और एकांत के द्वारा सच्चे ज्ञान के विकास के प्रबल संकेत हैं। जातक वैराग्य और आंतरिक भक्ति के जीवन से सच्ची मुक्ति और आध्यात्मिक शांति प्राप्त कर सकता है।

शास्त्रीय

लोमश
लग्नेशः व्ययभावे, विदेशगमनं स्वप्रियम्। मोक्षाभिलाषी वैरागी, व्ययशीलः परदेशस्थः।। प्रथम भाव का स्वामी द्वादश भाव में हो तो विदेश यात्रा, आध्यात्मिकता और वैराग्य की प्रवृत्ति का संकेत देता है। जातक एकांत और व्यय की ओर झुका रहता है।

यवन
यदि लग्नाधिपः द्वादशे। यदि प्रथम भाव का स्वामी द्वादश भाव में हो, तो जातक विदेश में रह सकता है या विदेशों में लंबा समय बिता सकता है। जातक आध्यात्मिक साधना, एकांत और अंतर्जीवन की ओर झुका हो सकता है। व्यय अधिक होगा और धन-संचय कठिन हो सकता है।

गार्गी
लग्नेशे व्ययभावे विदेशवासः आध्यात्मिकता च। प्रथम भाव का स्वामी द्वादश भाव में हो तो विदेश-निवास, आध्यात्मिक झुकाव और एकांत तथा निवृत्ति की प्रवृत्ति देता है। जातक को वैराग्य, ध्यान और संस्थागत परिवेश में दूसरों की सेवा में संतोष मिल सकता है।

भाव 2

स्वामी	शनि
भाव में स्वामी	12

फलादेश
जब 2रे भाव का स्वामी 12वें भाव में स्थित हो — एक दुःस्थान — तो आर्थिक समृद्धि, पारिवारिक संबंध, भौतिक संपत्ति का संचय और संवाद-कौशल के कारकत्व क्षीण, बिखरे हुए या आध्यात्मिक और त्यागमय लक्ष्यों की ओर मुड़ सकते हैं। 2रे भाव के विषय स्वैच्छिक वैराग्य, संसाधनों का व्यय, विदेश में जीवन और मोक्ष की आकांक्षा के क्षेत्र के माध्यम से व्यक्त होते हैं, अर्थात् व्यय, विदेशी संपर्क और सक्रिय सांसारिक जीवन से विरक्ति जीवन के इस क्षेत्र को आकार देंगे। जातक पा सकता है कि 2रे भाव के कारकत्वों का अनुभव विदेश में, एकांत की परिस्थितियों में या जीवन के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण के माध्यम से होता है। 2रे भाव के क्षेत्र में त्याग, आध्यात्मिक साधना और सेवा को सचेत रूप से अपनाना इस चुनौतीपूर्ण स्थिति को सच्ची मुक्ति के माध्यम में बदल सकता है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भाव 3

स्वामी	गुरु
भाव में स्वामी	7

फलादेश
जब 3रे भाव का स्वामी 7वें भाव में स्थित हो — जो एक केन्द्र स्थिति है — तो व्यक्तिगत निर्भीकता, उद्यमशीलता, छोटी यात्राएँ और छोटे भाई-बहनों के साथ संबंध के कारकत्वों को अभिव्यक्ति का सामान्यतः शुभ माध्यम मिलता है। 3रे भाव के विषय संबंधों में सामंजस्य, वैवाहिक सुख, व्यावसायिक सहयोग की गुणवत्ता और सार्वजनिक मेल-जोल के क्षेत्र के माध्यम से सक्रिय होते हैं, जिससे जातक को साहस, छोटे भाई-बहन और संवाद में पहल में सकारात्मक और फलदायी परिणाम मिलते हैं। यह स्थिति भाव स्वामी को वह केन्द्र और त्रिकोण बल देती है जो उसके परिणामों को दृढ़ता और निरंतरता के साथ देने के लिए आवश्यक है। जातक पाएगा कि साहस, छोटे भाई-बहन और संवाद में पहल 7वें भाव की परिस्थितियों और लोगों के माध्यम से सकारात्मक और लाभकारी रूप से व्यक्त होता है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भाव 4

स्वामी	मंगल
भाव में स्वामी	5

फलादेश
जब 4थे भाव का स्वामी 5वें भाव में स्थित हो — जो एक त्रिकोण स्थिति है — तो भावनात्मक संतोष, घर का वातावरण, माता के साथ संबंध और संपत्ति तथा वाहनों की प्राप्ति के कारकत्वों को अभिव्यक्ति का सामान्यतः शुभ माध्यम मिलता है। 4थे भाव के विषय सृजनात्मक बुद्धि, संतान के साथ संबंध, सट्टे की क्षमता और पूर्वजन्म के आध्यात्मिक पुण्य के फल के क्षेत्र के माध्यम से सक्रिय होते हैं, जिससे जातक को गृह-सुख, माता और अचल संपत्ति में सकारात्मक और फलदायी परिणाम मिलते हैं। यह स्थिति भाव स्वामी को वह केन्द्र और त्रिकोण बल देती है जो उसके परिणामों को दृढ़ता और निरंतरता के साथ देने के लिए आवश्यक है। जातक पाएगा कि गृह-सुख, माता और अचल संपत्ति 5वें भाव की परिस्थितियों और लोगों के माध्यम से सकारात्मक और लाभकारी रूप से व्यक्त होता है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भाव 5

स्वामी	शुक्र
भाव में स्वामी	9

फलादेश
जब 5वें भाव का स्वामी 9वें भाव में स्थित हो — जो एक त्रिकोण स्थिति है — तो सृजनात्मक बुद्धि, संतान के साथ संबंध, सट्टे की क्षमता और पूर्वजन्म के आध्यात्मिक पुण्य के फल के कारकत्वों को अभिव्यक्ति का सामान्यतः शुभ माध्यम मिलता है। 5वें भाव के विषय भाग्य, धर्मपरायण आचरण, पिता और आध्यात्मिक गुरुओं के साथ संबंध, तथा दार्शनिक ज्ञान के क्षेत्र के माध्यम से सक्रिय होते हैं, जिससे जातक को बुद्धि, संतान और पूर्वजन्म का पुण्य में सकारात्मक और फलदायी परिणाम मिलते हैं। यह स्थिति भाव स्वामी को वह केन्द्र और त्रिकोण बल देती है जो उसके परिणामों को दृढ़ता और निरंतरता के साथ देने के लिए आवश्यक है। जातक पाएगा कि बुद्धि, संतान और पूर्वजन्म का पुण्य 9वें भाव की परिस्थितियों और लोगों के माध्यम से सकारात्मक और लाभकारी रूप से व्यक्त होता है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भाव 6

स्वामी	बुध
भाव में स्वामी	9

फलादेश
जब 6ठे भाव का स्वामी 9वें भाव में स्थित हो — जो एक त्रिकोण स्थिति है — तो स्वास्थ्य-प्रबंधन, विरोधियों की पराजय, ऋणों का चुकाना और प्रतिस्पर्धी तथा सेवा-प्रधान परिस्थितियों में सफलता के कारकत्वों को अभिव्यक्ति का सामान्यतः शुभ माध्यम मिलता है। 6ठे भाव के विषय भाग्य, धर्मपरायण आचरण, पिता और आध्यात्मिक गुरुओं के साथ संबंध, तथा दार्शनिक ज्ञान के क्षेत्र के माध्यम से सक्रिय होते हैं, जिससे जातक को शत्रु, रोग और सेवा-भाव में सकारात्मक और फलदायी परिणाम मिलते हैं। यह स्थिति भाव स्वामी को वह केन्द्र और त्रिकोण बल देती है जो उसके परिणामों को दृढ़ता और निरंतरता के साथ देने के लिए आवश्यक है। जातक पाएगा कि शत्रु, रोग और सेवा-भाव 9वें भाव की परिस्थितियों और लोगों के माध्यम से सकारात्मक और लाभकारी रूप से व्यक्त होता है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भाव 7

स्वामी	चंद्र
भाव में स्वामी	9

फलादेश
जब 7वें भाव का स्वामी 9वें भाव में स्थित हो — जो एक त्रिकोण स्थिति है — तो संबंधों में सामंजस्य, वैवाहिक सुख, व्यावसायिक सहयोग की गुणवत्ता और सार्वजनिक मेल-जोल के कारकत्वों को अभिव्यक्ति का सामान्यतः शुभ माध्यम मिलता है। 7वें भाव के विषय भाग्य, धर्मपरायण आचरण, पिता और आध्यात्मिक गुरुओं के साथ संबंध, तथा दार्शनिक ज्ञान के क्षेत्र के माध्यम से सक्रिय होते हैं, जिससे जातक को विवाह, व्यावसायिक साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार में सकारात्मक और फलदायी परिणाम मिलते हैं। यह स्थिति भाव स्वामी को वह केन्द्र और त्रिकोण बल देती है जो उसके परिणामों को दृढ़ता और निरंतरता के साथ देने के लिए आवश्यक है। जातक पाएगा कि विवाह, व्यावसायिक साझेदारी और सार्वजनिक व्यवहार 9वें भाव की परिस्थितियों और लोगों के माध्यम से सकारात्मक और लाभकारी रूप से व्यक्त होता है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भाव 8

स्वामी	सूर्य
भाव में स्वामी	10

फलादेश
जब 8वें भाव का स्वामी 10वें भाव में स्थित हो — जो एक केन्द्र और उपचय स्थिति है — तो प्राण-शक्ति, गहरा मनोवैज्ञानिक रूपांतरण, विरासत, गुप्त विषयों की खोज और मृत्यु से साक्षात्कार के कारकत्वों को अभिव्यक्ति का सामान्यतः शुभ माध्यम मिलता है। 8वें भाव के विषय व्यावसायिक उपलब्धि, सार्वजनिक प्रतिष्ठा, सत्ता के साथ संबंध और करियर की विरासत का निर्माण के क्षेत्र के माध्यम से सक्रिय होते हैं, जिससे जातक को आयु, रूपांतरण और गूढ़ ज्ञान में सकारात्मक और फलदायी परिणाम मिलते हैं। यह स्थिति भाव स्वामी को वह केन्द्र और त्रिकोण बल देती है जो उसके परिणामों को दृढ़ता और निरंतरता के साथ देने के लिए आवश्यक है। जातक पाएगा कि आयु, रूपांतरण और गूढ़ ज्ञान 10वें भाव की परिस्थितियों और लोगों के माध्यम से सकारात्मक और लाभकारी रूप से व्यक्त होता है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भाव 9

स्वामी	बुध
भाव में स्वामी	9

फलादेश
जब 9वें भाव का स्वामी अपने ही भाव में स्थित हो, तो 9वें भाव के विषय अत्यधिक बलवान और आत्मनिर्भर होते हैं। भाग्य, धर्मपरायण आचरण, पिता और आध्यात्मिक गुरुओं के साथ संबंध, तथा दार्शनिक ज्ञान के कारकत्व पूर्णतः सशक्त होते हैं — स्वराशि में स्थित भाव स्वामी अपने ही दरबार में बैठे राजा के समान है, बाधाओं से मुक्त। जातक जीवन भर 9वें भाव के गुणों को स्वाभाविक आत्मविश्वास और प्रभावशीलता के साथ व्यक्त करेगा। यह किसी भी भाव स्वामी के लिए सबसे शक्तिशाली स्थितियों में से एक है, जो अपने अधिकार-क्षेत्र में स्वतंत्रता, बल और उत्कृष्ट परिणाम प्रदान करती है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भाव 10

स्वामी	शुक्र
भाव में स्वामी	9

फलादेश
जब 10वें भाव का स्वामी 9वें भाव में स्थित हो — जो एक त्रिकोण स्थिति है — तो व्यावसायिक उपलब्धि, सार्वजनिक प्रतिष्ठा, सत्ता के साथ संबंध और करियर की विरासत का निर्माण के कारकत्वों को अभिव्यक्ति का सामान्यतः शुभ माध्यम मिलता है। 10वें भाव के विषय भाग्य, धर्मपरायण आचरण, पिता और आध्यात्मिक गुरुओं के साथ संबंध, तथा दार्शनिक ज्ञान के क्षेत्र के माध्यम से सक्रिय होते हैं, जिससे जातक को करियर, व्यावसायिक अधिकार और सामाजिक प्रतिष्ठा में सकारात्मक और फलदायी परिणाम मिलते हैं। यह स्थिति भाव स्वामी को वह केन्द्र और त्रिकोण बल देती है जो उसके परिणामों को दृढ़ता और निरंतरता के साथ देने के लिए आवश्यक है। जातक पाएगा कि करियर, व्यावसायिक अधिकार और सामाजिक प्रतिष्ठा 9वें भाव की परिस्थितियों और लोगों के माध्यम से सकारात्मक और लाभकारी रूप से व्यक्त होता है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भाव 11

स्वामी	मंगल
भाव में स्वामी	5

फलादेश
जब 11वें भाव का स्वामी 5वें भाव में स्थित हो — जो एक त्रिकोण स्थिति है — तो विविध स्रोतों से आय, प्रिय लक्ष्यों की प्राप्ति और सहयोगी सामाजिक दायरे का निर्माण के कारकत्वों को अभिव्यक्ति का सामान्यतः शुभ माध्यम मिलता है। 11वें भाव के विषय सृजनात्मक बुद्धि, संतान के साथ संबंध, सट्टे की क्षमता और पूर्वजन्म के आध्यात्मिक पुण्य के फल के क्षेत्र के माध्यम से सक्रिय होते हैं, जिससे जातक को आर्थिक लाभ, इच्छाओं की पूर्ति और मित्रता में सकारात्मक और फलदायी परिणाम मिलते हैं। यह स्थिति भाव स्वामी को वह केन्द्र और त्रिकोण बल देती है जो उसके परिणामों को दृढ़ता और निरंतरता के साथ देने के लिए आवश्यक है। जातक पाएगा कि आर्थिक लाभ, इच्छाओं की पूर्ति और मित्रता 5वें भाव की परिस्थितियों और लोगों के माध्यम से सकारात्मक और लाभकारी रूप से व्यक्त होता है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भाव 12

स्वामी	गुरु
भाव में स्वामी	7

फलादेश
जब 12वें भाव का स्वामी 7वें भाव में स्थित हो — जो एक केन्द्र स्थिति है — तो स्वैच्छिक वैराग्य, संसाधनों का व्यय, विदेश में जीवन और मोक्ष की आकांक्षा के कारकत्वों को अभिव्यक्ति का सामान्यतः शुभ माध्यम मिलता है। 12वें भाव के विषय संबंधों में सामंजस्य, वैवाहिक सुख, व्यावसायिक सहयोग की गुणवत्ता और सार्वजनिक मेल-जोल के क्षेत्र के माध्यम से सक्रिय होते हैं, जिससे जातक को व्यय, आध्यात्मिक मुक्ति और विदेश-निवास में सकारात्मक और फलदायी परिणाम मिलते हैं। यह स्थिति भाव स्वामी को वह केन्द्र और त्रिकोण

बल देती है जो उसके परिणामों को दृढ़ता और निरंतरता के साथ देने के लिए आवश्यक है। जातक पाएगा कि व्यय, आध्यात्मिक मुक्ति और विदेश-निवास 7वें भाव की परिस्थितियों और लोगों के माध्यम से सकारात्मक और लाभकारी रूप से व्यक्त होता है।

शास्त्रीय · लोमश	—
शास्त्रीय · यवन	—
शास्त्रीय · गार्गी	—

भावों में ग्रह

भाव प्रणाली	Whole sign

ग्रह

सूर्य

भाव	10

यदि सुस्थित
दशम भाव में सूर्य करियर की सफलता और सांसारिक अधिकार के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थितियों में से एक है। जातक प्रसिद्ध, सम्मानित होगा और महान शक्ति के पदों पर रहेगा। वह सरकारी सेवा, राजनीति या नेतृत्व की भूमिकाओं में सफल होगा। उसका करियर प्रतिष्ठित होगा और वह अपने कार्यक्षेत्र में सुविख्यात होगा।

यदि पीड़ित
पीड़ित होने पर पद से अचानक पतन, वरिष्ठों से संघर्ष और सरकारी परेशानियाँ हो सकती हैं। जातक अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो सकता है और प्रतिष्ठा की खोज में दूसरों को हानि पहुँचा सकता है। सूर्य के अत्यधिक पीड़ित होने पर करियर में असफलताएँ और सार्वजनिक अपमान संभव हैं।

चंद्र

भाव	9

यदि सुस्थित
नवम भाव में चन्द्र भाग्यशाली और धन्य जीवन, आध्यात्मिक झुकाव और समर्पित व धर्मपरायण पिता देता है। जातक धर्म के प्रति समर्पित होगा, तीर्थ-यात्राएँ करेगा और उच्च शिक्षा तथा दार्शनिक कार्यों में सफल होगा। धर्मानुकूल जीवन से जातक पर भाग्य मुस्कुराता है।

यदि पीड़ित
पीड़ित होने पर पिता से विवाद, बदलती और असंगत धार्मिक मान्यताएँ तथा आस्था व दर्शन के विषयों में भावनात्मक अस्थिरता हो सकती है। जातक सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक होने के स्थान पर अंधविश्वासी हो सकता है।

मंगल

भाव	5

यदि सुस्थित
पंचम भाव में मंगल प्रतिस्पर्धी बुद्धि, गतिशील रचनात्मकता और खेल, सट्टे तथा रचनात्मक क्षेत्रों में सफलता देता है। जातक रचनात्मक महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में उत्साही, ऊर्जावान और प्रबल होगा। संतान बलवान और खेलकूद में कुशल हो सकती है।

यदि पीड़ित
पीड़ित होने पर संतान से जुड़ी गंभीर कठिनाइयाँ, जिनमें संभावित हानि या रोग शामिल हैं, आवेगपूर्ण सट्टे की हानियों से आर्थिक तंगी और प्रेम-संबंधों में आक्रामक व्यवहार हो सकता है जो साथी को दूर कर देता है।

बुध

भाव	9

यदि सुस्थित
नवम भाव में बुध दार्शनिक बुद्धि, उच्च शिक्षा और प्रकाशन में सफलता तथा धार्मिक व दार्शनिक विमर्श में कुशलता देता है। जातक अनेक विषयों का विद्वान होगा और शिक्षक, विद्वान या दार्शनिक व आध्यात्मिक ग्रंथों के लेखक के रूप में सफल होगा।

यदि पीड़ित
पीड़ित होने पर बौद्धिक अभिमान और अहंकार, निरंतर बदलती दार्शनिक मान्यताएँ जो गहरी आस्था में बाधक हों, और ऐसे शिक्षकों व आध्यात्मिक मार्गदर्शकों से कठिनाइयाँ हो सकती हैं जिन्हें जातक अत्यधिक तर्कशील और विश्लेषणशील लगे।

गुरु

भाव	7

यदि सुस्थित
सप्तम भाव में गुरु आदर्श, बुद्धिमान, आध्यात्मिक झुकाव वाला और अत्यंत भाग्यशाली जीवनसाथी देता है। जातक विवाह, साझेदारियों और सार्वजनिक व्यवहार से बहुत समृद्ध होगा। विवाह सच्चे सुख और परस्पर विकास का स्रोत होगा।

यदि पीड़ित
पीड़ित होने पर साथी का अति-आदर्शीकरण हो सकता है जो वास्तविकता के कम पड़ने पर गहरी निराशा देता है, साझेदारियों में कानूनी विवाद हो सकते हैं और ऐसे साथियों को आकर्षित करने की प्रवृत्ति हो सकती है जो नैतिकतावादी किंतु अव्यावहारिक हों।

शुक्र

भाव	9

यदि सुस्थित
नवम भाव में शुक्र भाग्यशाली, सुखद और कलात्मक रूप से समृद्ध जीवन-दर्शन देता है। जातक को सौंदर्य, संगीत और कलाओं के माध्यम से आध्यात्मिक संतोष मिलेगा। विदेश यात्राएँ अत्यंत सुखद होंगी और महत्वपूर्ण प्रेम या कलात्मक भेंटों की ओर ले जा सकती हैं।

यदि पीड़ित
पीड़ित होने पर भोग-प्रधान और स्वार्थपूर्ण आध्यात्मिक मान्यताएँ जो अति-उपभोग और सुख की खोज को उचित ठहराएँ, प्रेम या आर्थिक अति के कारण पिता से कठिनाइयाँ और कानूनी मामलों में गलत निर्णय हो सकते हैं।

शनि

भाव	12

यदि सुस्थित
द्वादश भाव में शनि गहरा और सच्चा आध्यात्मिक जीवन, त्याग और एकांतवास में सफलता, गहन ध्यान की क्षमता और निरंतर आध्यात्मिक अनुशासन व सांसारिक इच्छाओं से वैराग्य के माध्यम से संभावित मोक्ष देता है।

यदि पीड़ित
पीड़ित होने पर, द्वादश भाव में शनि रोग, एकाकीपन, कारावास या अस्पताल में भर्ती होने के रूप में दीर्घकालिक और कठिन बंधन लाता है। दीर्घकालिक कष्ट के कारण भारी आर्थिक व्यय हो सकता है। गुप्त शत्रु निरंतर और कठिनाई से निवारण योग्य हानि पहुँचाते हैं।

राहु

भाव	1

यदि सुस्थित
प्रथम भाव में राहु अपरंपरागत, करिश्माई और तीव्र महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व देता है, जिसके प्रबल विदेशी संबंध हों और जिसकी असामान्य प्रतिभाएँ अप्रत्याशित रूप से प्रकट हों। जातक असाधारण और अपरंपरागत साधनों से जीवन में उन्नति करेगा। उसका व्यक्तित्व सम्मोहक होगा जो दूसरों को प्रबलता से आकर्षित करता है।

यदि पीड़ित
पीड़ित होने पर दीर्घकालिक पहचान-भ्रम, स्नायु-तंत्र और मस्तिष्क से जुड़ी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ, छल की प्रवृत्ति और दूसरों को हानि पहुँचाने वाली जुनूनी महत्वाकांक्षा हो सकती है। बाहरी सफलता के बावजूद जातक गहराई से असंतुष्ट रह सकता है।

केतु

भाव	7

यदि सुस्थित
सप्तम भाव में केतु अत्यंत आध्यात्मिक और कार्मिक रूप से महत्वपूर्ण साझेदारी की संभावना देता है जिसमें दोनों साथी संबंध के माध्यम से गहराई से विकसित होते हैं। स्वयं के अहं से विरक्ति सच्चा आध्यात्मिक मिलन लाती है।

यदि पीड़ित
पीड़ित होने पर गंभीर और कार्मिक रूप से बोझिल वैवाहिक कठिनाइयाँ, अलगाव, मृत्यु या आध्यात्मिक दूरी के कारण साथी की हानि और व्यवहार्य व स्थायी व्यापारिक साझेदारियाँ स्थापित करने में दीर्घकालिक बाधाएँ हो सकती हैं।

दशा फल

प्रणाली	Vimshottari
की तिथि के अनुसार	2026-11-08

महादशा

स्वामी	गुरु
प्रारंभ	2013-05-30
अंत	2029-05-30
स्वामी भाव	7

फलादेश
- नैतिक और धर्मसम्मत साधनों से धन, समृद्धि और सुख की प्राप्ति होगी।
- जातक को शिक्षकों, गुरुओं और दैवी विभूतियों का आशीर्वाद और कृपा प्राप्त होगी।
- संतान असाधारण आनंद, गौरव और सच्चे सुख का स्रोत होगी।
- विवाह और शुभ साझेदारियाँ फलेंगी-फूलेंगी और स्थायी संतोष देंगी।
- जातक अपने ज्ञान, उदारता और नैतिक सत्यनिष्ठा के लिए सम्मानित और प्रतिष्ठित होगा।
- शैक्षिक और आध्यात्मिक प्रयास फलेंगे-फूलेंगे और व्यापक पहचान तथा पुरस्कार दिलाएँगे।
- कानूनी मामले, दर्शन और धार्मिक प्रयास जातक के पक्ष में सुलझेंगे।
- इस शुभ अवधि में ज्ञान, भाग्य और आध्यात्मिक समझ में वृद्धि होगी।

भाव अनुसार फलादेश
- विवाह और साझेदारी में उत्कृष्ट वरदान; जीवनसाथी विवेकशील, नैतिक और समर्पित होगा।
- शिक्षा, कानून, चिकित्सा और परामर्श क्षेत्र में व्यावसायिक साझेदारी अत्यंत अनुकूल और फलदायी होगी।
- जातक न्यायपूर्ण, नैतिक और परस्पर लाभकारी समझौतों और अनुबंधों से समृद्ध होगा।
- कानूनी मामले अनुकूल रूप से सुलझेंगे और संबंध सच्चा विवेक और सुख लाएँगे।
- असाधारण ईमानदारी, विवेक और नैतिक चरित्र वाला जीवनसाथी प्राप्त होगा।
- सच्ची धार्मिकता की शक्ति से जातक सभी क्षेत्रों में लाभकारी साझेदारियाँ आकर्षित करेगा।
- विवाह सुख, वृद्धि, विवेक और जीवन के प्रति जातक की समझ का विस्तार लाएगा।

अंतर्दशा

स्वामी	मंगल
प्रारंभ	2026-01-28
अंत	2027-01-04

फलादेश
- साहसी महत्वाकांक्षा और निर्भीक कर्म वास्तव में उदात्त और योग्य लक्ष्यों की प्राप्ति को प्रेरित करते हैं।
- भूमि-संपत्ति की प्राप्ति और अनुकूल कानूनी परिणामों के प्रबल संकेत हैं।
- भाई और पुरुष संबंधी सार्थक सहयोग और व्यावहारिक सहायता प्रदान करते हैं।
- शारीरिक जीवनशक्ति और आध्यात्मिक ज्ञान शक्तिशाली और फलदायी रूप से मिलते हैं।

शुभ वस्तुएँ

शुभ दिन	शनिवार और बुधवार अत्यंत अनुकूल हैं।
शुभ रंग	गहरा नीला और काला रंग शुभ हैं। लाल और गुलाबी रंग अशुभ रहेंगे।
शुभ अंक	8, 4, 6 और 17 अत्यंत शुभ अंक हैं। प्रत्येक माह की 1, 10 और 19 तारीख़ें अशुभ हैं।
रत्न	नीलम। विकल्प: जमुनिया (एमेथिस्ट) या नीला टोपाज़।
वैकल्पिक रत्न	लाजवर्त, नीला स्पिनेल या आयोलाइट (नीली)।
शुभ संकेत	मकर, कुम्भ, वृषभ और तुला अनुकूल हैं।

शुभ अवधि
पौष या माघ मास (मध्य दिसंबर से मध्य फ़रवरी) अत्यंत शुभ है। यवनाचार्य के अनुसार कृष्ण पक्ष, शनिवार की शाम सबसे अनुकूल समय है। प्रत्येक मास की 8, 17, 26 तारीख़ें विशेष रूप से भाग्यशाली हैं।

अशुभ दिन	रविवार — सूर्य द्वारा शासित दिन, जो इस लग्न के लिए प्रमुख शत्रु ग्रह है।

अशुभ मास
प्रत्येक वर्ष के अप्रैल और मई सामान्यतः कम अनुकूल रहते हैं। प्रत्येक मास की 1, 10, 19 तारीख़ें अशुभ हैं। लाल और गुलाबी रंग के वस्त्रों से बचना चाहिए। रविवार अशुभ है।

अशुभ तिथियाँ	तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी अशुभ हैं।

रत्न

प्राथमिक	Blue Sapphire (Neelam)
विकल्प	Amethyst or Blue Topaz
उपरत्न	नीली (आयोलाइट), लाजवर्द (लैपिस लाजुली) या नीला स्पिनल
धातु	Iron and Silver
उंगली	Middle finger (Madhyama)
दिन	Saturday morning (sunrise)
मंत्र	Om Shanaye Namah (108 times)

अनुष्ठान
स्थायी रूप से धारण करने से पहले नीलम का सात दिन तक परीक्षण करें। शुक्ल पक्ष में किसी शनिवार को सूर्योदय के समय इसे सरसों के तेल, गंगाजल और कच्चे दूध में शुद्ध करें। शनि को नीले पुष्प या तिल अर्पित करें। 'ॐ शनये नमः' का 108 बार जाप करें और फिर मध्यमा उँगली में धारण करें।

> **सावधानी**
> स्थायी रूप से धारण करने से पहले नीलम का एक सप्ताह तक परीक्षण करें। लाल रत्नों से बचें।

श्लोक

संस्कृत	नीलं शनेरत्नं स्यात् दीर्घायुष्यकरं परम् । कर्मसिद्धिप्रदं दिव्यं दारिद्र्यविनाशनम् ॥
अनुवाद	नीलम शनि का रत्न है। यह परम दीर्घायु, सभी कार्यों में सिद्धि और दैवी आशीर्वाद प्रदान करता है, तथा दरिद्रता और दुर्भाग्य का नाश करता है।
स्रोत	बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय 82

> रत्न धारण करना वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण विचारणीय विषय है जो जीवन के अनेक क्षेत्रों को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित कर सकता है। प्राचीन भारतीय ऋषियों ने रत्नों के विज्ञान (रत्न शास्त्र) और ग्रह-ऊर्जाओं की शुभ रश्मियों को सुदृढ़ करने की उनकी क्षमता पर पर्याप्त ध्यान दिया। प्रत्येक रत्न एक विशिष्ट ग्रह-आवृत्ति के साथ अनुनाद करता है और सही ढंग से धारण किए जाने पर जातक के जीवन में अपने स्वामी ग्रह के कारकत्वों को सुदृढ़ कर सकता है। नीचे सुझाया गया प्रमुख रत्न लग्नेश — कुण्डली के सबसे महत्वपूर्ण ग्रह — और जन्म कुण्डली में उसकी वास्तविक शक्ति के आधार पर निर्धारित किया गया है।

विवरण
शास्त्रकारों के अनुसार नीलम शनि के कारकत्वों को बल देता है — जब ग्रह बलवान और शुभ स्थिति में हो, तो इससे दीर्घायु, अनुशासन, व्यावसायिक उपलब्धि, भौतिक स्थिरता तथा दरिद्रता और दुर्भाग्य का नाश होता है। नीलम को सभी ग्रह-रत्नों में सबसे शक्तिशाली और सबसे शीघ्र फल देने वाला माना जाता है — स्थायी रूप से पहनने से पहले इसकी सावधानीपूर्वक परख करनी चाहिए, क्योंकि अननुकूल नीलम गंभीर व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। जब इसे ऐसा व्यक्ति धारण करता है जिसका लग्नेश शनि हो और रत्न अनुकूल हो, तो नीलम सीधे जातक के व्यावसायिक अनुशासन, संगठन-क्षमता, आयु तथा निरंतर प्रयास से स्थायी सफलता पाने की क्षमता को बल देता है। शनि आयु, करियर, अनुशासन, दीर्घकालिक रोगों, तंत्रिका-तंत्र, हड्डियों और दीर्घकालिक निरंतर प्रयास वाले सभी मामलों का कारक है — इन सभी को विधिवत परखा हुआ नीलम लाभ पहुँचाता है। स्थायी रूप से पहनने से पहले इस रत्न को एक सप्ताह तक परखना चाहिए। इसे लोहे या चाँदी में जड़वाकर शनिवार के दिन दाहिने हाथ की मध्यमा उँगली में धारण करना चाहिए।

शक्ति विश्लेषण
लग्नेश शनि जन्म कुण्डली में सम स्थिति में स्थित है। रत्न की अनुशंसा ग्रह के स्वाभाविक कारकत्वों को स्थिर सहारा प्रदान करती है। मुख्य रत्न धारण करने से समय के साथ स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और जीवन-परिस्थितियों में ग्रह का सकारात्मक योगदान धीरे-धीरे सुदृढ़ होगा। यह

वर्तमान में लग्न से 12वें भाव में स्थित है। लग्नेश का 12वें भाव में स्थित होना दर्शाता है कि मुख्य रत्न धारण करने से सबसे अधिक सहारा आध्यात्मिक विकास, विदेशी संबंधों और सीमित करने वाले ढर्रों से मुक्ति को मिलेगा। जातक का आंतरिक जीवन और आध्यात्मिक साधना गहरी होगी।

जीवन रिपोर्ट

व्यक्तित्व

आधार · लग्न राशि	मकर
आधार · लग्नेश	शनि
आधार · लग्नेश भाव	12

पैराग्राफ

- जातक का जन्म पृथ्वी राशि में हुआ है जिसका स्वामी शनि है, जो अनुशासित, महत्वाकांक्षी और असाधारण रूप से धैर्यवान व्यक्तित्व देता है। उसमें निरंतर प्रयास, रणनीतिक योजना और स्थायी संरचनाओं के क्रमिक निर्माण की स्वाभाविक प्रतिभा होती है। जातक उत्तरदायी, व्यावहारिक और सभी प्रयासों में उत्कृष्टता तथा सत्यनिष्ठा के प्रति गहराई से प्रतिबद्ध होता है। गंभीर आचरण और कड़ी कार्य-निष्ठा इस जातक को सभी व्यावसायिक और सामाजिक संदर्भों में विशिष्ट बनाती है। पहचान और सफलता समय के साथ निरंतर प्रयास से स्थिर रूप से आती है।
- लग्न राशि मकर पृथ्वी तत्व की है, और यहाँ यह तत्व अपने सबसे अनुशासित, महत्वाकांक्षी और उपलब्धि-उन्मुख रूप में प्रकट होता है। मकर के पृथ्वी लग्न वाले जातकों में असाधारण धैर्य, रणनीतिक बुद्धि और बहुत लंबी अवधि तक निरंतर प्रयास करने की उल्लेखनीय क्षमता होती है। मकर में पृथ्वी तत्व ऐसा व्यक्तित्व बनाता है जो उत्तरदायी, व्यावहारिक रूप से सुदृढ़ और स्थायी मूल्य तथा सार वाली संरचनाएँ बनाने के प्रति गहराई से प्रतिबद्ध होता है। जातक की सबसे बड़ी प्रतिभाएँ संगठनात्मक अनुशासन, धैर्यपूर्ण दृढ़ संकल्प और जीवन के सभी क्षेत्रों में दीर्घकालिक दृष्टि से चलने का विवेक हैं।
- मकर चर राशि है, जो जातक को उल्लेखनीय प्रशासनिक पहल-शक्ति, रणनीतिक प्रेरणा और महत्वाकांक्षी दीर्घकालिक लक्ष्य निर्धारित कर निरंतर, सुव्यवस्थित प्रयास से उनकी ओर लगातार बढ़ने की अनुशासित क्षमता देती है। मकर में चर राशि के लग्न रणनीतिक योजना, अनुशासित प्रयास और स्थायी उपलब्धि के व्यवस्थित निर्माण के माध्यम से पहल करते हैं। जातक तब सबसे अधिक सजीव होता है जब वह धैर्य और संगठनात्मक सटीकता के साथ स्पष्ट, महत्वाकांक्षी लक्ष्यों की ओर काम कर रहा हो।
- 12वें भाव में स्थित लग्नेश ऐसा व्यक्तित्व बनाता है जिसमें गहरी आध्यात्मिक प्रवृत्तियाँ, एकांत और आत्मचिंतन की प्रवृत्ति, तथा सामान्य सांसारिक जीवन से ऊपर उठने की स्वाभाविक उन्मुखता होती है। जातक विदेश में या चिंतनशील, संस्थागत अथवा आध्यात्मिक परिवेश में महत्वपूर्ण समय बिता सकता है। आध्यात्मिक साधना, रचनात्मक कल्पना और छिपे परिवेश में सेवा व्यक्तित्व की गहनतम ऊर्जा और उद्देश्य की सबसे प्रामाणिक अभिव्यक्तियों में हैं।
- 10वें भाव में स्थित सूर्य — इसकी सबसे उन्नत स्थिति — व्यक्तित्व को सार्वजनिक उपलब्धि, व्यावसायिक अधिकार और स्थायी मान्यता की ओर स्पष्ट प्रेरणा देता है। जातक का अहं सबसे प्रबल रूप से करियर की उपलब्धियों और दृश्यमान सामाजिक प्रतिष्ठा की प्राप्ति के माध्यम से व्यक्त होता है। यह व्यावसायिक सफलता और स्थायी सार्वजनिक प्रतिष्ठा के लिए कुण्डली की सबसे प्रबल स्थितियों में से एक है।
- लग्न में स्थित राहु जातक को महत्वाकांक्षी, अपरंपरागत और तीव्र रूप से प्रेरित व्यक्तित्व देता है, जिसमें सीमाएँ तोड़ने और कुछ अनूठा तथा अभूतपूर्व प्राप्त करने की बेचैनी होती है। व्यक्तित्व में चुंबकीय, कुछ असामान्य गुण होता है जो दूसरों को आकर्षित भी करता है और असहज भी करता है। जातक के जीवन-पथ में सांसारिक अनुभव और सार्वजनिक मान्यता की प्रबल इच्छा का सामना करना और धीरे-धीरे उसे आत्मसात करना शामिल है।

मानसिक

आधार

चंद्र राशि	कन्या
चंद्र नक्षत्र	चित्रा
बुध भाव	9
चंद्र भाव	9

पैराग्राफ

- मन विश्लेषणात्मक, सटीक और व्यावहारिक होता है तथा व्यवस्था, उपयोगिता और सुधार की ओर प्रबल प्रेरणा रखता है। जातक भावनाओं को विश्लेषण के माध्यम से समझता है और कभी-कभी भावनाओं को सहज रूप से अनुभव करने के बजाय उन पर बौद्धिक विचार करने लगता है। स्वास्थ्य के प्रति सजगता और सेवा की इच्छा भावनात्मक प्रेरणा देती हैं।

- जन्म नक्षत्र चित्रा, जिसका स्वामी मंगल है, मन को रचनात्मक, स्थापत्य की-सी सटीकता वाला और सौंदर्य की दृष्टि से परिष्कृत गुण देता है। सौंदर्य, पूर्णता और स्थायी लालित्य तथा संरचनात्मक दृढ़ता वाली कृतियों के सृजन की प्रबल प्रेरणा होती है। मन कलात्मक, दृश्य-कला में प्रतिभाशाली और डिज़ाइन, स्थापत्य, रत्न-तराशी तथा परिष्कृत शिल्प के सभी रूपों की ओर आकर्षित होता है। व्यक्तिगत पहचान की प्रबल भावना और अपने रचनात्मक कार्य की गुणवत्ता पर गर्व इसकी विशेषता है।
- 9वें भाव में चन्द्र भावनात्मक रूप से विस्तृत, दार्शनिक झुकाव वाला और स्वाभाविक रूप से भाग्यशाली स्वभाव देता है — यात्रा, उच्च शिक्षा और आध्यात्मिक अनुभव भावनात्मक जीवन का गहरा पोषण करते हैं।
- 9वें भाव में बुध मन को दार्शनिक, नैतिक और व्यापक रूप से शिक्षित स्वभाव देता है — दूरस्थ अध्ययन, धार्मिक दर्शन और उच्च शिक्षा स्वाभाविक रूप से प्रेरक और गहराई से संतोषप्रद होते हैं।
- चन्द्र राशि का स्वामी 9वें भाव में स्थित होने पर भावनात्मक रूप से विस्तृत, दार्शनिक रूप से प्रेरित और स्वाभाविक रूप से भाग्यशाली मानसिक स्वभाव देता है — यात्रा, ज्ञान और आध्यात्मिक अनुभव प्रमुख भावनात्मक पोषण हैं।

करियर

आधार

दशम राशि	तुला
दशमेश	शुक्र
दशमेश भाव	9
सूर्य भाव	10
मंगल भाव	5
शनि भाव	12

पैराग्राफ

- भाव 10 तुला राशि में पड़ता है, जो कूटनीति, विधि, कलाओं और साझेदारी-आधारित कार्यों में करियर का संकेत है। जातक विधि, न्यायपालिका, कूटनीति, फैशन, डिज़ाइन, परामर्श और संतुलन, निष्पक्षता तथा सौंदर्य-परिष्कार की अपेक्षा वाले सभी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। साझेदारियों और सहयोगी उपक्रमों के माध्यम से करियर में सफलता का संकेत है।
- 10वें भाव का स्वामी 9वें भाव में होने पर शिक्षण, विधि, धर्म, प्रकाशन या दर्शन में अत्यंत भाग्यशाली करियर बनता है। जातक ज्ञान, नैतिक आचरण और उच्च ज्ञान की निरंतर साधना से व्यावसायिक प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। अंतरराष्ट्रीय करियर और अंतर-सांस्कृतिक व्यावसायिक गतिविधियाँ विशेष रूप से अनुकूल हैं।
- 10वें भाव में स्थित सूर्य संपूर्ण कुण्डली में करियर की सबसे शक्तिशाली स्थितियों में से एक है, जो जातक को असाधारण व्यावसायिक मान-सम्मान, कार्यकारी अधिकार और स्थायी सार्वजनिक प्रतिष्ठा देता है।
- 5वें भाव में स्थित मंगल रचनात्मक, शैक्षिक, सट्टा और मनोरंजन क्षेत्रों में व्यावसायिक ऊर्जा देता है। जातक में रचनात्मक कार्य में प्रतिस्पर्धात्मक प्रेरणा होती है और वह सोच-समझकर ऐसे व्यावसायिक जोखिम उठा सकता है जो बुद्धि और रचनात्मक साहस के बल पर महत्वपूर्ण लाभ देते हैं।
- 12वें भाव में स्थित शनि विदेश, एकांत संस्थाओं, आध्यात्मिक संगठनों या ऐसे क्षेत्रों में व्यावसायिक उपलब्धि देता है जिनमें किसी बड़े उद्देश्य की सेवा में व्यक्तिगत सुख-सुविधा का दीर्घकालिक अनुशासित त्याग आवश्यक हो।

ग्रह प्रभाव

- करियर पर सूर्य का प्रभाव जातक को अधिकार, नेतृत्व और मान्यता की प्रबल आकांक्षा देता है। सरकारी सेवा, कार्यकारी पद और व्यक्तिगत आकर्षण तथा गरिमा की अपेक्षा वाली भूमिकाएँ अनुकूल हैं।

वित्त

आधार

द्वितीयेश	शनि
द्वितीयेश भाव	12
एकादशेश	मंगल
एकादशेश भाव	5
एकादश राशि	वृश्चिक
गुण	Moderate

पैराग्राफ

- 2रे भाव का स्वामी 12वें भाव में स्थित होने पर भारी व्यय, हानि या आय से अधिक खर्च हो सकते हैं। जातक विदेश में या आध्यात्मिक कार्य से कमा सकता है। अनुशासित वित्तीय योजना और अत्यधिक व्यय से बचना आवश्यक है।

- 11वें भाव का स्वामी 5वें भाव में होने पर बौद्धिक कार्य, रचनात्मक गतिविधियों, शिक्षा, सट्टे और बुद्धि के निवेश से लाभ देता है।
- लाभ का 11वाँ भाव वृश्चिक राशि में है, जो दर्शाता है कि आय सबसे स्वाभाविक रूप से अनुसंधान, जाँच-पड़ताल, बीमा, विरासत, गूढ़ सेवाओं और दूसरों के संसाधनों के प्रबंधन से जुड़ी गतिविधियों से आती है।

संबंध

आधार

सप्तम राशि	कर्क
सप्तमेश	चंद्र
सप्तमेश भाव	9
शुक्र भाव	9
मंगल भाव	5

पैराग्राफ

- भाव 7 कर्क राशि में पड़ता है, जो पालन-पोषण करने वाले, भावनात्मक रूप से संवेदनशील, घरेलू और गहराई से निष्ठावान जीवनसाथी का संकेत है। संबंधों में प्रबल भावनात्मक और घरेलू गुण होता है। जातक ऐसे साथियों की ओर आकर्षित होता है जो सच्ची भावनात्मक सुरक्षा और स्नेहपूर्ण, परिवार-केंद्रित वातावरण दें।
- 7वें भाव का स्वामी 9वें भाव में होने पर शुभ, दार्शनिक रूप से अनुकूल और भाग्यशाली विवाह देता है — जीवनसाथी विदेश में जन्मा, उच्च शिक्षित, आध्यात्मिक झुकाव वाला या धार्मिक और दार्शनिक कार्यों से जुड़ा हो सकता है।
- 9वें भाव में शुक्र सौंदर्य, यात्रा और उच्च ज्ञान के साझा प्रेम के साथ भाग्यशाली, दार्शनिक रूप से अनुकूल और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करने वाली साझेदारी देता है।
- 5वें भाव में मंगल प्रेम संबंधों में उत्कट प्रेम-ऊर्जा और प्रबल शारीरिक आकर्षण देता है। जातक प्रेम की अभिव्यक्ति में उत्साही, ऊर्जावान और स्पष्ट होता है।
- 7वें भाव में गुरु — विवाह की गुणवत्ता के लिए सर्वोत्तम स्थितियों में से एक — जातक को असाधारण रूप से बुद्धिमान, उदार, दार्शनिक रूप से अनुकूल और आध्यात्मिक झुकाव वाला जीवनसाथी देता है। विवाह अत्यंत आशीर्वादयुक्त होता है।
- 7वें भाव में गुरु बुद्धिमान, उदार, दार्शनिक प्रवृत्ति वाला और आध्यात्मिक झुकाव वाला जीवनसाथी देता है — यह गहरे सुखी, समृद्ध और स्थायी विवाह के लिए सबसे शुभ स्थितियों में से एक है।
- 7वें भाव में केतु आध्यात्मिक झुकाव वाला, कुछ भावनात्मक रूप से विरक्त जीवनसाथी देता है — इस संबंध में गहरा कार्मिक गुण होता है, जिसमें पूर्वजन्म के प्रबल संबंध एक तीव्र और कुछ अवर्णनीय बंधन के रूप में प्रकट होते हैं।

स्वास्थ्य

आधार · लग्न राशि	मकर
आधार · षष्ठ राशि	मिथुन
आधार · अष्टम राशि	सिंह

पैराग्राफ

- मकर लग्न दुबली, अनुशासित शरीर-प्रकृति देता है जिसमें हड्डियाँ, जोड़, घुटने और त्वचा संवेदनशील होते हैं। गठिया, जोड़ों की समस्याएँ, अस्थि-घनत्व की समस्याएँ और ठंड तथा नमी से जुड़े दीर्घकालिक रोगों पर ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है। शारीरिक ढाँचे के स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त पोषण, कैल्शियम का सेवन, गर्माहट और नियमित भार-वहन व्यायाम आवश्यक हैं।
- 6ठा भाव मिथुन राशि में पड़ता है, जो श्वसन रोगों, स्नायु विकारों, कंधे और भुजाओं की समस्याओं तथा चिंता-जनित रोगों की प्रवृत्ति दर्शाता है — श्वास-अभ्यास (प्राणायाम), नियमित विश्राम, मानसिक शांति और स्नायु तंत्र को सहारा देना अत्यंत लाभकारी निवारक स्वास्थ्य उपाय हैं।
- आयु का 8वाँ भाव सिंह राशि में पड़ता है, जो दर्शाता है कि परिवर्तनकारी स्वास्थ्य घटनाओं में हृदय, मेरुदंड या रक्त-संचार तंत्र शामिल हो सकते हैं। हृदय और रक्त-वाहिनियों के स्वास्थ्य की निरंतर दीर्घकालिक निगरानी और देखभाल आवश्यक है।
- 6ठे भाव का स्वामी 9वें भाव में होने पर लंबी यात्राओं, दार्शनिक कार्यों या यकृत और जाँघों से जुड़ी कुछ स्वास्थ्य चुनौतियाँ आ सकती हैं — परंतु भाग्य और धर्ममय जीवन सामान्यतः रोग से उबरने और स्वास्थ्य की पुनर्प्राप्ति में सहायक होते हैं।
- लग्न में राहु असामान्य, कठिनाई से पहचाने जाने वाले या असाधारण लक्षणों वाले स्वास्थ्य विकार दे सकता है — विषहरण (डिटॉक्स), जीवनशैली का अनुशासन और अपरंपरागत उपचार पद्धतियों के प्रति खुलापन विशेष रूप से महत्वपूर्ण स्वास्थ्य उपाय हैं।

आध्यात्मिक

आधार

नवम राशि	कन्या
नवमेश	बुध
नवमेश भाव	9
द्वादश राशि	धनु
द्वादशेश	गुरु
गुरु भाव	7
केतु भाव	7
शनि भाव	12

पैराग्राफ

- भाव 9 कन्या राशि में पड़ता है, जो धर्म और दर्शन के प्रति विश्लेषणात्मक, सेवा-उन्मुख और अनुशासित दृष्टिकोण देता है। जातक व्यवस्थित अध्ययन, नैतिक जीवन और समर्पित सेवा के माध्यम से आध्यात्मिकता तक पहुँचता है। व्यावहारिक, यथार्थपरक और बौद्धिक रूप से सुसंगत आध्यात्मिक परंपराओं को प्राथमिकता इसकी विशेषता है।
- 9वें भाव का स्वामी 9वें भाव (अपने ही भाव) में होने पर धर्म, भाग्य और आध्यात्मिक ज्ञान को प्रबल रूप से सुदृढ़ करता है — जातक स्वाभाविक और गहन रूप से धर्मसम्मत समझ और आध्यात्मिक जीवन जीने की वास्तविक क्षमता से संपन्न होता है।
- 12वाँ भाव धनु राशि में पड़ता है, जो दर्शाता है कि आध्यात्मिक मार्ग में दार्शनिक प्रणालियों के प्रति आसक्ति का क्रमिक त्याग और सत्य के प्रत्यक्ष, बिना माध्यम के अनुभव का विकास शामिल है। लंबी अवधि का एकांतवास और दार्शनिक एकांत स्वाभाविक रूप से लाभकारी हैं।
- 12वें भाव का स्वामी 7वें भाव में होने पर विदेशी जीवनसाथी, आध्यात्मिक झुकाव वाला साथी या ऐसा विवाह संकेतित हो सकता है जिसमें प्रबल आध्यात्मिक और त्यागमय गुण हो।
- 12वें भाव में शनि मोक्ष के साथ प्रबल कार्मिक संबंध देता है — जातक के आध्यात्मिक मार्ग में त्याग और समर्पण के दीर्घ अभ्यास के माध्यम से सभी अनावश्यक आसक्तियों का धैर्यपूर्ण विलय शामिल है।

संतान

आधार

पंचम राशि	वृषभ
पंचमेश	शुक्र
पंचमेश भाव	9
गुरु भाव	7
चंद्र भाव	9

पैराग्राफ

- भाव 5 वृषभ राशि में पड़ता है, जो स्थिर, स्नेही और कलात्मक रूप से प्रतिभाशाली संतान का संकेत है। जातक संतान को भौतिक सुख-सुविधा, सौंदर्य और भावनात्मक सुरक्षा देगा। संतान के साथ संबंध आत्मीय, स्थिर और स्थायी होंगे। संतान में संगीत या कलाओं की स्वाभाविक प्रतिभा हो सकती है।
- 5वें भाव का स्वामी 9वें भाव में होने पर असाधारण रूप से भाग्यशाली, बुद्धिमान, आध्यात्मिक रूप से प्रतिभाशाली और दार्शनिक झुकाव वाली संतान देता है — जातक का सबसे गहरा धार्मिक उद्देश्य उसकी संतान के विकास के माध्यम से पूरा होता है।
- 7वें भाव में गुरु अत्यंत अनुकूल विवाह के आशीर्वाद से संतान देता है — जीवनसाथी की बुद्धिमत्ता और उदारता भाग्यशाली और प्रतिभाशाली संतान की संभावनाओं को बढ़ाती है।
- 5वें भाव में मंगल ऊर्जावान, साहसी और शारीरिक रूप से प्रतिस्पर्धी संतान देता है — माता-पिता और संतान का संबंध उत्साहपूर्ण, प्रेरक होता है, जिसमें साझा उत्साह और कभी-कभी तीव्रता रहती है।

रुद्राक्ष

प्रमुख मुखी	3

सुझाव

Teen Mukhi (3 Face)

मुखी	3
ग्रह	मंगल
देवता	अग्नि देव और भगवान ब्रह्मा
मंत्र	Om Kleem Namah
धारण करने का दिन	मंगलवार
धातु	Gold or Copper
रंग	Brown
दुर्लभता	Common

लाभ

- कर्म-चक्र और पूर्वजन्म के बोझ से मुक्त करता है।
- ऊर्जा, साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास बढ़ाता है।
- अवसाद, हीन भावना और आत्म-संदेह को कम करता है।
- रक्त विकार, ज्वर और पाचन संबंधी समस्याओं में लाभकारी।
- मंगल दोष या निर्बल मंगल वालों के लिए आदर्श।

किसे पहनना चाहिए	मेष/वृश्चिक लग्न, निर्बल मंगल या मंगल से जुड़ी समस्याओं से पीड़ित लोगों के लिए उपयुक्त।

सावधानी

अत्यधिक आक्रामक स्वभाव हो तो न पहनें; यह मनका मंगल की ऊर्जा को और बढ़ाता है।

कारण	अंक ज्योतिषीय मूलांक 9 है (ग्रह: मंगल)

Chaar Mukhi (4 Face)

मुखी	4
ग्रह	बुध
देवता	Lord Brahma and Goddess Saraswati
मंत्र	Om Hreem Namah
धारण करने का दिन	बुधवार
धातु	Gold
रंग	Brown
दुर्लभता	Common

लाभ

- बुद्धि, स्मरणशक्ति, वाक्चातुर्य, संवाद कौशल और रचनात्मकता बढ़ाता है।
- मन की जड़ता दूर करता है और एकाग्रता सुधारता है।
- विद्यार्थियों, लेखकों, शिक्षकों और सार्वजनिक वक्ताओं के लिए लाभकारी।
- हकलाहट, मानसिक विकारों और पक्षाघात से उबरने में सहायता करता है।
- शिक्षा, संवाद और रचनात्मक क्षेत्रों से जुड़े लोगों के लिए आदर्श।

किसे पहनना चाहिए	मिथुन/कन्या लग्न, निर्बल बुध या संवाद से जुड़े व्यवसायों वाले लोगों के लिए उपयुक्त।

सावधानी

सर्वोत्तम फल के लिए इसे स्वच्छ रखें और नियमित रूप से ऊर्जावान करें।

कारण	चन्द्र राशि का स्वामी बुध है (चन्द्र कन्या में)

Paanch Mukhi (5 Face)

मुखी	5
ग्रह	गुरु
देवता	कालाग्नि (काल और अग्नि के स्वामी) / पंचानन शिव
मंत्र	Om Hreem Namah
धारण करने का दिन	गुरुवार
धातु	Gold
रंग	Brown
दुर्लभता	Very Common

लाभ

- सबसे बहुपयोगी और सार्वभौमिक रूप से लाभकारी रुद्राक्ष।
- स्वास्थ्य, शांति, विवेक, ज्ञान और समृद्धि को बढ़ावा देता है।
- रक्त को शुद्ध करता है और रक्तचाप को नियंत्रित करता है।
- गुरु के अशुभ प्रभाव कम करता है और सकारात्मक गुणों को बढ़ाता है।
- सभी के लिए उपयुक्त — समग्र कल्याण और आध्यात्मिक उन्नति को बढ़ावा देता है।

किसे पहनना चाहिए	सार्वभौमिक — सभी के लिए उपयुक्त। धनु/मीन लग्न या निर्बल गुरु वालों के लिए विशेष रूप से लाभकारी।

सावधानी

सबसे अधिक पहना जाने वाला, और इसके प्रामाणिक नमूने सबसे आसानी से मिलते हैं।

कारण

- 5 मुखी रुद्राक्ष सभी के लिए सार्वभौमिक रूप से लाभकारी है — यह गुरु और समग्र कल्याण का कारक है।

Chhe Mukhi (6 Face)

मुखी	6
ग्रह	शुक्र
देवता	Lord Kartikeya (Commander of Devas)
मंत्र	Om Hreem Hum Namah
धारण करने का दिन	शुक्रवार
धातु	Silver
रंग	Brown
दुर्लभता	Common

लाभ

- विलासिता, सौंदर्य, प्रेम और भौतिक सुख-सुविधाएँ देता है।
- कलात्मक क्षमता, इच्छाशक्ति और स्थिरता बढ़ाता है।
- प्रजनन स्वास्थ्य और नेत्र रोगों में लाभकारी।
- आलस्य दूर करता है और रचनात्मक कार्यों में एकाग्रता लाता है।
- कलाकारों, संगीतकारों, डिज़ाइनरों और प्रेम की तलाश करने वालों के लिए आदर्श।

किसे पहनना चाहिए	वृषभ/तुला लग्न, निर्बल शुक्र या संबंधों और रचनात्मकता में समस्याओं का सामना कर रहे लोगों के लिए उपयुक्त।

सावधानी

परंपरागत रूप से सोमवार या शनिवार को दाहिनी भुजा पर या लॉकेट के रूप में पहना जाता है।

कारण	सूर्य राशि का स्वामी शुक्र है (सूर्य तुला में)

Saat Mukhi (7 Face)

मुखी	7
ग्रह	शनि
देवता	अनंग (प्रेम के देवता) और महालक्ष्मी
मंत्र	Om Hum Namah
धारण करने का दिन	शनिवार
धातु	Silver or Iron
रंग	Brown
दुर्लभता	Common

लाभ

- सौभाग्य लाता है, दरिद्रता दूर करता है और समृद्धि आकर्षित करता है।
- साढ़े साती सहित शनि के अशुभ प्रभावों को कम करता है।
- आर्थिक स्थिति, धन और व्यावसायिक समृद्धि बढ़ाता है।
- पुराने रोगों और हड्डियों से जुड़े विकारों में लाभकारी।
- आर्थिक कठिनाइयों या शनि-पीड़ा का सामना कर रहे लोगों के लिए आदर्श।

किसे पहनना चाहिए	मकर/कुम्भ लग्न, साढ़े साती की अवधि या निर्बल/पापी शनि वालों के लिए उपयुक्त।

सावधानी

शनि महादशा या साढ़े साती के दौरान विशेष रूप से अनुशंसित।

कारण	लग्नेश शनि है (लग्न: मकर)

Terah Mukhi (13 Face)

मुखी	13
ग्रह	शुक्र
देवता	कामदेव (प्रेम के देवता) और भगवान इंद्र
मंत्र	Om Hreem Namah
धारण करने का दिन	शुक्रवार
धातु	Gold
रंग	Brown
दुर्लभता	Rare

लाभ

- भौतिक इच्छाएँ, सांसारिक सुख और आध्यात्मिक ज्ञान पूर्ण करता है।
- चुंबकीय व्यक्तित्व, काम-ऊर्जा और रूमानी आकर्षण बढ़ाता है।
- व्यापार, वाणिज्य और वार्ताओं में सफलता दिलाता है।
- प्रजनन तंत्र की समस्याओं और हार्मोन संतुलन में लाभकारी।
- प्रेम, विलासिता और भौतिक सफलता चाहने वालों के लिए आदर्श।

किसे पहनना चाहिए	वृषभ/तुला लग्न, निर्बल शुक्र या प्रेम और संबंधों में चुनौतियों का सामना कर रहे लोगों के लिए उपयुक्त।

सावधानी

दुर्लभ और शक्तिशाली — स्पष्ट उद्देश्य के साथ प्रयोग करें। नकारात्मक उद्देश्यों के लिए न पहनें।

कारण	सूर्य राशि का स्वामी शुक्र है (सूर्य तुला में)

Chaudah Mukhi (14 Face)

मुखी	14
ग्रह	शनि
देवता	भगवान हनुमान और भगवान शिव (देव मणि)
मंत्र	Om Namah
धारण करने का दिन	शनिवार
धातु	Gold
रंग	Brown
दुर्लभता	Very Rare

लाभ

- इसे 'देव मणि' कहा जाता है — देवताओं का रत्न; अत्यंत दुर्लभ और शक्तिशाली।
- अंतर्ज्ञान, दूरदर्शिता और निर्णय-क्षमता बढ़ाता है।
- बुरी आत्माओं, काले जादू और नकारात्मक प्रभावों से रक्षा करता है।
- व्यावसायिक निर्णयों और रणनीतियों में दैवी मार्गदर्शन देता है।
- नेताओं, निर्णयकर्ताओं और आध्यात्मिक पथ पर चलने वालों के लिए आदर्श।

किसे पहनना चाहिए	दैवी मार्गदर्शन, रक्षा और बढ़े हुए अंतर्ज्ञान की आवश्यकता वालों के लिए उपयुक्त। आध्यात्मिक साधकों के लिए सर्वोत्तम।

सावधानी

अत्यंत दुर्लभ और महँगा। ख़रीदने से पहले इसकी प्रामाणिकता सावधानी से जाँच लें।

कारण	लग्नेश शनि है (लग्न: मकर)

आपका ब्रांड यहाँ

yourbrand.example · hello@yourbrand.example · +91 00000 00000

इस दस्तावेज़ के बारे में

यह रिपोर्ट प्रदर्शित जन्म विवरणों से गणना की गई एक ज्योतिषीय व्याख्या है। यह शास्त्रीय और आधुनिक विधियों द्वारा कुंडली से पढ़ी गई प्रवृत्तियों का वर्णन करती है; यह निश्चित घटनाओं की भविष्यवाणी नहीं है, और यह चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय या मनोवैज्ञानिक सलाह नहीं है।

96Astro API द्वारा गणना की गई · report-complete-kundli · जॉब sample

